

रणमल्ल छंद

[वीररसात्मक राजस्थानी चरित काव्य]

संपादक

मूलचन्द्र 'प्राणेश'



प्रकाशक

भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
वोकानेर (राजस्थान)

भारतीय विद्या मंदिर ग्रंथमाला—७

- प्रधान संपादक
सत्यनारायण पारीक
संचालक भा वि म शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर

- परामश मंडल
श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम ए
श्री शम्भूदयाल सकसेना साहित्यपरत्न
श्री अक्षयचंद्र शर्मा, एम ए
श्री रामेश्वर प्रसाद पाडिया एम ए
श्री चंद्रदान चारण, एम ए

- © भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर

- प्रथम संस्करण शाके १८९४ (१९७२ ई)

- मूल्य रु० ७ ५० (सजिल्द)
६०० (अजिल्द)

- प्रकाशक
भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर (राजस्थान)

- मुद्रक
एङ्ग्लो-गंगा प्रेस बीकानेर

आभार

भारतीय विद्या मंदिर प्रथमाला का सातवा पुष्प रणमल्ल छत्र अध्येताश्रम पाठकों की सेवा में सह्य प्रस्तुत है । इससे पूर्व भी राजस्थान के शिक्षा विभाग । अनेक साहित्यानुरागियों के सहयोग से प्रकाशित ग्रंथ जिस प्रकार साहित्य जगत । समाहत हुए है आशा है बसे ही प्रस्तुत ग्रंथ भी स्वीकार किया जायगा ।

'रणमल्ल छत्र व ऐतिहासिक, साहित्यिक सामाजिक राजनतिक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की महती आवश्यकता अनुभव की जा रही थी । प्रसन्नता का विषय है कि इस प्रकार का प्रथम सर्वांगीण अध्ययन प्रतिष्ठान' के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है ।

भारतीय विद्या मंदिर बीकानेर
नवरात्रि स्थापना, स० २०२६ वि०

मूलचंद्र पारीक
अध्यक्ष सचिव

दो शब्द

श्रीधर व्यास कृत 'रणमल्ल छन्द' के सबंध में सबप्रथम गुजराती में स्वर्गीय रा. व. केशवनाल ह० घु. व. और व. हैयालाल मा० मुशी ने प्रकाश डाला है। इस काव्य के साहित्यिक सौष्ठव पर जितना अध्ययन अपेक्षित था वह तब नहीं हो पाया। विश्वविद्यालय स्तर पर राजस्थानी भाषा व साहित्य विषयक शोध मभावनाएँ अत्यंत विस्तृत हो गई हैं। इसी मभावना की परिपूर्ति की दृष्टि से 'प्रतिष्ठान' द्वारा 'भारतीय विद्या मंदिर प्रथमाना' के अंतर्गत 'रणमल्ल छन्द' का संपादन काय हाथ में लिया गया।

वीर रणमल्ल अपने समय का महान् योद्धा था। प्रस्तुत काव्य में उसके गीय की गाथा अवित है। लघकाय खडकाय होते हुए भी यह पश्चिमोत्तर भारत की सतयुगीन उथल पुथल का पूरा चित्र प्रस्तुत करता है। के द्रीय सत्ता के निबल हो जाने की स्थिति में सुदूर प्रदेश स्थित स्थानीय उद्भट शासक किस प्रकार सत्ता के लिये सिरदद बन जाते थे और घर्माघ मुस्लिम सूबेदारों से अपनी कतिपय मानवीय मांग ताओं के लिए किस प्रकार साहस और जीवट के साथ लोहा लिया करते थे, इसका समुच्चल उदाहरण वीर रणमल्ल का उदात्त चरित्र है।

फारसी तबारीखों में स्थानीय युद्धों का उल्लेख न होना अथवा तथ्या को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया जाना ऐतिहासिक दृष्टि से जो एक कमी है उसकी पूर्ति देशी स्रोतों से सम्भव है। अतः ऐतिहासिक तथ्यों की परिपूरणा की दृष्टि में 'रणमल्ल छन्द' जिस ऐतिहासिक काव्यों का प्रकाशन, विन अध्येताओं व पाठकों के लिए आवश्यक है।

डा० रघुबीरसिंहजी ने अपनी प्रस्तावना में काव्य के ऐतिहासिक तत्त्वा की जो समीचीन याख्या प्रस्तुत की है उससे काव्य में निहित सामाजिक व सांस्कृतिक अंतर्घाता सुस्पष्ट हो गई है। प्रस्तुत काव्य में वर्णित प्रमुख युद्ध—रणमल्ल व जफरखान के मध्य—की संपृष्टि डा० माहव ने विभिन्न ऐतिहासिक स्रोतों से भली प्रकार से की है। इसके प्रतिरिक्त अंग—विशेषतः जफरखान प्रथम व शमसुद्दीन अयू राजा के साथ हुए—युद्धों के सबंध में जो गवेषणापूरण अभिमत प्रकट किया है वह बड़ा मूल्यवान है। उनकी प्रस्तावना में सबसे बड़ा लाभ यह मिला है कि काव्य और उसकी विषय वस्तु के सबंध में अब तक चले आ रहे मतभेदों का निराकरण हो गया है।

यमीवद्ध डा० रघुबीरसिंहजी ने अति-उपलब्ध रहते हुए भी त्रिंशत् स्नेह व सोहार्त्त
 क साय प्रस्तापना लिखने की शृता की है, उसक निष् मी स्वय तपा सस्था की जोर
 से धामार मानता ह।

प्रतिष्ठान' ने रणमत्न छत्र के सपादन प्रकाशन का काय हाप म लेकर
 जो लक्ष्य-पूति करनी चाही थी, उमे मूर्त्त रूप म देव कर मुझे बडी प्रसन्नता हो रही
 है। इसम श्री मूलष द प्राणेश' का काय विनेय सराहनीय है। इस सबध म समय-समय
 पर सस्था की विचार गोष्ठियों म सक्षत्री रामेश्वरप्रसाद पाडिया चन्द्रदान चारण
 सूर्यगजर पारीक माणक तिवारी 'बधु' का उत्तुसखनीय सहयोग रहा है।

भा वि म शोध प्रतिष्ठान,
 बीकानेर (राजस्थान)
 नवरात्रि स्थापना, स० २०२६ वि०

सत्यनारायण पारीक
 सचालक

प्रस्तावना

छत्तीस तीस-पतीस वर्षों से प्रादेशिक अथवा क्षेत्रीय इतिहास, साहित्य सस्कृति और समाज आदि के अध्ययन की ओर अधिकाधिक ध्यान दिया जाने लगा है। समूचे भारत के इतिहास समाज और सस्कृति आदि के सामूहिक विवरण की एक मोटी रूप रेखा बहुत-बहुत बन चुकी है। परंतु अब भी उसमें अनेकानेक बड़े बड़े अंतराल हैं जिनके कारण उक्त रूप रेखा को किसी भी प्रकार परिपूर्ण नहीं कहा जा सकता है। इन्हीं कमियों के कारण अनेकों प्रदर्शों के इतिहास आदि के विवरण या तो भ्रष्ट अथवा सवथा एकांगी ही हैं। इस प्रकार की कमियों तथा एक पक्षीयता को दूर करने के लिए प्रादेशिक और क्षेत्रीय इतिहास तथा साहित्य के अध्ययन की ओर विशेष ध्यान दिया जाना सवथा अनिवार्य हो गया है। पुन यह बात भी सवमान्य हो गई है कि इतिहास सस्कृति और समाज आदि के यापक ज्ञान तथा तद्विषयक अध्ययन को परिपूर्ण करने के लिये उस क्षेत्र अथवा प्रदेश के समकालीन अथवा उस काल विशेष से सम्बद्ध साहित्य का भी गहराई तक विस्तृत अध्ययन और उससे प्राप्त जानकारी की पूरी पूरी जाँच पड़ताल होनी चाहिये।

यही नहीं प्रादेशिक भाषाओं अथवा विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों के उद्गम विकास और समय समय पर उन पर पड़ने वाले अनेकानेक अलग अलग प्रभावों को ठीक तरह से जानने और उनकी प्रगति को समझने के लिये भी विभिन्न कालीन साहित्य के भाषा वज्ञानिक अध्ययन के लिये यथासंभव विशेष प्रयत्न ही रहे हैं। अतः ऐसे प्रादेशिक अथवा क्षेत्रीय साहित्य की एक या अनेक कृतिओं के सर्वाङ्गीण गहन अध्ययन से परिपूर्ण प्रयास की सदैव समुत्प्रेक्षापूर्ण प्रतीक्षा बनो रहती है क्योंकि उनके प्रकाशन से तब तक सुलभ ज्ञान की सीमाओं में थोड़ी बहुत वृद्धि की आशा की जाती है। अधिकाधिक अध्ययन और निरंतर चल रहे वाद विवादों अथवा विवेचनों के फल स्वरूप प्राप्त ऐसे विशेष तथ्यों को भी सत्य परखा जाना चाहिये कि उनमें से जो मान्य हो जायें उनसे ज्ञान सरिता को अधिक समृद्ध तथा गतिशील बनाया जा सके। यही कारण है कि श्रीधर व्यास वृत्त 'रा रणमल्ल ध्व' के इस नए संस्करण का प्रकाशन क्षेत्रीय इतिहास साहित्य और भाषा के अध्ययन के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है।

वल गुजरात का सूबेदार था। अतः यह अनुमान तक-सगन ही है कि सन् १४०७ ई० जफर खा के मुजफ्फर शाह नाम से स्वयं को गुजरात का स्वाधीन सुलतान घोषित करने के बाद ही श्रीधर व्यास ने इस काव्य की रचना की होगी जिससे अफन का य म इसने जफर खा के लिये अनामास ही बार-बार सुरताण' १०' का प्रयोग किया। इस प्रकार से इस काव्य के रचना काल को सन् १४०८ से १४११ ई० तक में सीमित कर सकते हैं।

इस 'रा रणमल्ल छंद' काव्य में वर्णित मुख्य युद्ध के विषय के बारे में अब कोई शका समाधान का कारण नहीं रह जाना चाहिये। सन् १६६१ ई० में दिल्ली के तुगलक सुलतान नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह द्वारा नियुक्त गुजरात के सूबेदार जफर खा ने सन् १३६८-६९ ई० में जब ईडर पर दूसरी बार आक्रमण किया तब ईडर के राव रणमल्ल के साथ उमका जो संधि हुआ उसी का विवरण इस काव्य में किया गया है। कारण कुछ भी हुआ हो मुसलमान इतिहासकार भी यह स्वीकार करते हैं कि इस बार के आक्रमण में जफर खा को रणमल्ल के विरुद्ध कोई सफलता नहीं मिली थी। इसी संधि को श्रीधर व्यास ने अपने इस काव्य में रणमल्ल की अनीली अभूतपूर्व सफलता के रूप में अतिरंजित कल्पनापूर्ण शायदवी के द्वारा प्रस्तुत किया तथा अंतिम छंद में 'इकच्छत रवि तल्लिकरू' के रणमल्ल के स्वप्न का भी उल्लेख कर दिया है। जफर खा की इस विफलता का महत्त्व तब इस कारण भी बढ़ गया था कि इसके कुछ ही समय बाद तमूर लंग द्वारा पराजित खुदाबन्ध 'असफत' सुलतान महमूद तुगलक दिल्ली से भाग कर उमसे सैनिक सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से जफर खा के पास गुजरात पहुँचा था।

इस काव्य के पूर्व भाग में खभात धूलका (धोलका) आदि नगरी में किये गये रणमल्ल के अनेक उपातों तथा गुजरात की तत्कालीन प्रमुख नगरी पट्टण (पाटण) तक में व्याप्त उसके आतंक का वर्णन करते हुए कवि ने अनेकानेक मुसलमान वीरों, मलिकों (स्थानीय शासकों) आदि कई एक सेनानायकों के उसके हाथों पराजित होने का उल्लेख किया है। परंतु रणमल्ल के ही मुख से उमकी जिन दो विशिष्ट विजयों की बात इस काव्य (छ० स० ३२-३३) में कहलाई गई है, उनकी ऐतिहासिकता और उनसे सबद्ध व्यक्तियों की सही पहिचान विषयक विवेचन आवश्यक हो जाता है। प्रथम तो रणमल्ल ने जघीदफर खान (क) दारुण दब्ब' को पराजित कर भगा देने का दावा किया है। उसके इस दावे का पूरा समर्थन मेवाड के सुविख्यात

सामग्री में कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं होने के कारण ही रणमन्त्र के बान की किसी घटना के उक्त काव्य में उल्लेख को सवथा अविश्वसनीय नहीं कहा जा सकता है।

छ० स० ६२ ६३ में उल्लिखित सोनगिरि (जालौर) के काहूडदेव के 'गजत्रणवद अमुरइ' के साथ युद्ध कर सोमनाथ की मूर्ति छीन लेने और उसके पुन प्रतिष्ठा करने की बात में उल्लेखनीय प्रसिद्धता यही है कि कवि ने भ्रमवशा दिल्ली के सुलतान अनाउद्दीन खिलजी को 'गजत्रणवद (गजनीपति) कहा है। महमूद गजनी द्वारा सन् १०२५ ई० में खूबसूरत सोमनाथ के सुप्रसिद्ध मन्दिर का गुजरात के चोलुक्य शासकों ने पुननिर्माण करवाया था। गुजरात विजय के लिये अलाउद्दीन खिलजी द्वारा भेजी गई मुसलमानी सेना ने सोमनाथ के इस पुननिर्मित मन्दिर को जून ६ १२६६ ई० को ध्वस्त कर उसमें स्थापित शिवलिंग को बूझ बूझ कर दिया। उस भग्न शिवलिंग के इन खण्डों को अपने साथ लेकर जब यह विजयी मुसलमानों सेना दिल्ली को लौट रही थी, तब जालौर के पास उमम उल्लेख किट्टी उठ खड़ा हुआ। उससे पूरा लाभ उठा कर जालौर के शासक काहूडदेव ने उस भग्न शिवलिंग के उन खण्डों को अपने अधिकार में ले लिया और बाद में उन्हें यथन्त प्रतिष्ठा किया। यों "रावल काहूडदेव ने हिन्दुस्तान की बड़ी मर्मादा बनाये रखी"।^४ अतः कवि ने यहाँ काहूडदेव का सादर उल्लेख किया है, परन्तु अपने इस कथन में उक्त स्पष्ट अतिहासिकता की ओर कवि का ध्यान कैसे नहीं गया, यह बान समझ में नहीं आती है।

इसा की १४वीं शती के मध्य में जब रणमन्त्र ईडर की राजगद्दी पर बसा, तब तब गुजरात प्रदेश में दिल्ली के सुलतानों का प्राथमिक सुन्द रूप से स्थापित हो चुका था, परन्तु वह मुख्यतया समस्त मर्यादाओं और प्रमुख नगरों अथवा बसवों तक ही अतिवृत्त सीमित रहा था। गुजरात विजय के बाद भी उसके अधीनस्थ प्रभाव पूरा प्रमुख शक्तिशाली राजपूतों के सुदृढ गढ मुसलमानी सत्ता की विरोधी प्रणयना स्व तत्र इकाइयों के रूप में अभाव बने रहे। गुजरात के पूर्वी सीमांत क्षेत्र में सिधर ईडर और चापानेर—पावागढ में तब मुसलमानी सत्ता के विरोधी प्रथम दाने लगे तथापि किन्तु अल्प पहारों में सिधर सुदृढ दुर्गों से शासन कर रहे इन विरोधी स्वाधीन राजपूत शासकों का दमन करने का तब कोई सुव्यवस्थित विशेष संशक्त आमीजन न मभव था और न किया जा सका। किरोज तुगलक के शातिपूर्ण सम्झौता-कारक शासनकाल में कई वर्षों तक गुज

४ श्रीक मजुमदार चौलुक्य आक गुजरात पृ० ४३ ४८, ३७० ३७५, सतीशचन्द्र मिश्र, दी राज आक मुस्लिम पावर इन गुजरात पृ० ६३ ६४, दशरथ शर्मा, राजस्थान प्रू दी एजेस १, पृ० ६३६ ६४६, मुहम्मद नणसी की स्मार्त, (नागरी प्रचारिणी सभा), १, पृ० १५५ १६०।

रात की सूझगारों करने के साथ धर्मनी स्थानीय स्थिति को सुदृढ़ समझ कर तब जकर सा प्रथम धर्मना उभर सहायक धर्मसुद्धीन धर्म राजा ने तब जो प्रयत्न किया थे, उनकी विफलता का उल्लेख पहिले किया ही जा चुका है। गुजरात में स्वाधीन प्रांतीय संपन्न की सुनिश्चित समाधान के सुस्पष्ट होने के बाद ही ईसा की १५वीं सदी में तब सोमनाथ सफल आयोजन सम्भव हो सके थे। अतः ईसा की १५वीं सदी के उत्तरार्ध में इन सीमांत पहाड़ी प्रदेशों में व्याप्त परिस्थितियों तथा बहा के राजपूत राजाओं के दृष्टि कोण और उनकी गतिविधियों का प्रतिरजित होते हुए भी बहुत कुछ स्पष्ट चित्रण और रणमहल छंद में मिलता है जिससे मट्टवपूण ऐतिहासिक आधार सामग्री के रूप में इस कार्य का अध्ययन और विवेचन किया जाना चाहिए।

इस संस्करण के साक्ष्य द्वारा यद्यत्त मनजान दुहराद गई एक ऐतिहासिक मूल का निराकरण करना अत्यावश्यक जान पड़ता है। समूचे राजस्थान पर अपना आधिपत्य स्थापित करने वाली एकमात्र मुसलमानी सत्ता मुगल साम्राज्य ही थी अतएव राजस्थान में यवन सत्ता और मुगल आधिपत्य पर्यायवाची शब्द बन गए। यही कारण है कि हम काव्य के अंतिम छंद (पृ० ७०) का अर्थ लिखने समय अनायास ही विच्छेदायण का अर्थ मुगल लिख दिया गया। इसी प्रकार भूमिका में भी पृ० २६-२७ पर 'यवन के स्थान में भ्रमवश यदा कदा 'मगल' लिखा गया है। यह तो सुघात है कि तब दिल्ली के सुलतानों अथवा गुजरात के सूझगारों में कोई भी मगल नहीं था।

इसी सभ्य में हम काव्य के एक और उल्लेख का स्पष्टीकरण धर्मिवाय हो जाता है। छ० स० १८ और १९ में गुजरात की मुसलमानी सेना में विभिन्न जाति के सैनिकों आदि का विवरण लिखने समय कवि ने मुगल मेखल तथा मुगल महाराज 'सन्निह' का भी उल्लेख किया है। काव्य में मुगल का अर्थ मुगल दिया है जो ठीक नहीं है उसका सही अर्थ 'मगोल' है। सिंधु नदी के पार अफगानिस्तान प्रांत उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रांतों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर ईसा की १५वीं सदी के मध्य से ही ये बौद्ध धर्मावलम्बी मगोल दिल्ली की सत्तनन पर निरंतर आक्रमण करते रहते थे। इन आक्रमणों में कद हो गये मगालों ने ब्रह्मसुद्धीन विजय और ब्रह्मांडीन विजयों के शासनकालों में इस्लाम धर्म धरिकार कर लिया था। तुगलक सुलतानों के शासनकाल में उन मुसलमान मगोलों के बगल दिल्ली सल्तनत की सेना में पुनः भरती किये जाने लगे थे और उभय संसुद्ध यदा कदा उच्च पदों पर भी नियुक्त हुए थे।^५ सो उक्त छंदों में तब ही मुसलमान मगोलों के मुगल बगलों का उल्लेख है।

५ महर्षि हंसन की राज्ञ एण्ड फॉम धार सुद्धय विन तुगलक (१९३८ ई०) पृ० २२७ २०८ ।

साहित्यिक और भाषावर्णािक दृष्टियों में भी 'राजमल्ल छंद का सविस्तार गभीर गहन अध्ययन अत्यावश्यक है। ईसा की १४वीं शती गुजरात और राजस्थान के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण निर्णायक पड़ावतन बिंदु प्रस्तुत करती है। गुजरात विजय के बाद वहां मुसलमानी सत्ता स्थापित हो गई और धीरे धीरे उसके आधिपत्य के साथ उसकी संस्कृति भाषा आदि का प्रभाव समूचे प्रांत में बढने लगा। उधर राजस्थान में चित्तौड़ के प्रथम साके तथा मवाड के रावल घराने की समाप्ति के साथ ही तब तक चले आ रहे पूव मध्यकालीन राजस्थान तथा उसकी युगयुगीन ऐतिहासिक परम्पराओं आदि का भी अंत हो गया। परंतु राजस्थान के उस पुरातन राजनतिक मानचित्र को पूरणतया मिटा कर सारी स्लेट को साफ कर देने वाले दिल्ली सल्तनत के प्रबल प्रभावी मुसलमान शासक भी वहां अपना मनचाहा नया राजनतिक मानचित्र अंकित नहीं कर सके, प्रत्युत ईसा की इस १४वीं शती के मध्य तब दिल्ली की मुसलमानी सल्तनत का रहा-सहा प्रभाव भी धीरे धीरे बढ़ा से लुप्त होने लगा था। इस धरा जकतापूर्ण युगांतर काल में पूव तथा पश्चिम क्षेत्रों से आए हुए कई नये राजपूत घराने राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी जड़े जमान में लगे हुए थे। इस प्रकार तब राजस्थान के राजकीय ही नहीं, पूणतया नये राजपूत राजवंशीय मानचित्र का भी सीमा कम होने लगा था। या राजस्थान के इतिहास में जिम सवथा नये युग का आधिभाव हुआ उसके साथ ही राजस्थान के साथ गुजरात के तब तक चले आ रहे सांस्कृतिक साहित्यिक तथा भाषिक आदि सारे सवध धीरे धीरे क्षीण होने लगे, और भ्रष्ट पाई जाने वाली सब विभिन्नताएँ तदन्तर निरंतर बढनी ही गईं। अतएव ईसा की १५वीं शती के प्रारंभ में रचित ऐसे काव्यों का अध्ययन साहित्यिक और भाषाई एकता की महत्त्वपूर्ण कड़ियों के रूप में किया जाना चाहिए। पुन ऐसे काव्यों में पुरानी गुजराती अथवा जूनी राजस्थानी को प्राकृत या अपभ्रंश से जोडने वाली अनेकानेक प्राच्य कड़ियां भी खोजी जानी चाहिए, जिससे बाद में प्रयुक्त होने वाले तथा आज भी प्रचलित अनेकों शब्दों की ठीक व्युत्पत्ति आदि बात की जाकर उसे सही रूप में निर्धारित की जा सके। गुजराती तथा राजस्थानी के साथ ही हिंदी के शब्द कोष की भी वह विशेष उल्लेखनीय उपलब्धि हागी।

अपनी विस्तृत भूमिका में इस संस्करण के संपादक ने 'राजमल्ल छंद' की सत्ता और स्वरूप का सत्यतः विस्तृत विवेचन किया है। इस काव्य प्रथ के अकस्मात् पाये जान तथा उसके प्रथम संस्करण के संपादन और प्रकाशन सम्बन्धी जानकारी के साथ ही इस काव्य के रचयिता तथा उसकी अन्य रचनाओं विषयक ज्ञात विवरण भी दे दिया है। इस काव्य में वर्णित मुख्य तथा अन्य युद्धों के बारे में अब तक चल रहे वाद विवादों को सुलभाने अथवा आतिया को दूर करने का मयाक ने जो उल्लेखनीय सफल प्रयत्न किया है उसकी परिपुष्टि इस प्रस्तावना में पहिले लिये गये विवेचन से की जा चुकी है। इस काव्य की भाषा की समीक्षा करते समय उसमें परिनिष्ठित प्राकृत शब्दों

अपभ्रंश की गणनाओं के उदाहरण देने के बाद यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि अपनी किन विशेषताओं के कारण वह प्राकृत या अपभ्रंश से पृथक् और पश्चात् कालीन राजस्थानी भाषा के प्रति निकट देख पड़ती है। इस काव्य के साहित्यिक महत्त्व को सुस्पष्ट करने के लिये उसके काव्यत्व उसमें देख पड़ने वाले युग चित्रण तथा उसमें पाये जाने वाले रस अलंकार, छन्द आदि के साथ ही उसकी बहान गली और शब्द प्रयोगों की भी सोदाहरण समीक्षा की गई है। इन सब ही विषयों पर कुछ भी लिखना मेरे लिये संभवता अनधिकार चेष्टा ही होगी। मूल पाठ के साथ पाठ भेद और मूल काव्य का हिन्दी में भाषांतर तथा अन्त में शब्द कोष दे दिया गया है जिससे इस काव्य के मूल पाठ को समझने तथा उसके अध्ययन में बड़ी सुविधा हो गई है। इस प्रकार सब ही विभिन्न ढंग, स्तर अथवा रुचि के पाठकों के लिये इस संस्करण को सहायक और उपयोगी बनाने का भरसक प्रयत्न किया गया है।

अतएव यह बात तो संभवता सुनिश्चित जान पड़ती है कि इस महत्त्वपूर्ण काव्य के इस नये सुसंपादित संस्करण के प्रकाशन तथा उसकी इस विस्तृत भूमिका में प्रस्तुत विवेचन से इस काव्य को ही नहीं तत्कालीन साहित्य के भी गहन अध्ययन का एक नया अध्याय अनायास ही प्रारम्भ हो जायेगा। अतएव सा रणमत्तन छन्द के इस नये संस्करण का स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि इसके पठन पाठन से भाषा वशा निका तथा साहित्यकारों को भी नई दिशा और विनोद प्ररणा प्राप्त हो सकेगी।

रघुवीर निवास'

सीतामठ (मालवा)

सितम्बर २०, १९७२ ई०

—रघुवीरसिंह

रणमल्ल छंद

भूमिका

रणमल्ल छंद सज्ञा और स्वरूप

'रणमल्ल छंद' एक 'छंद सज्ञक काव्य है। स्वयं रचयिता ने भी इसे 'बरी-योर छंद' कहा है।^१ सामान्यतः छंद शब्द का अर्थ नियमित अक्षरों अथवा मात्राओं में रचित एक पद्य प्रकार' लिया जाता है। छंद शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। इसकी व्युत्पत्ति छंद घातु से मानी गयी है, जिसका अर्थ धावत करने या रक्षित करने के साथ साथ प्रसन्न करना भी होता है। प्रसन्न करने के ही अर्थ में तिघण्टु में छंद घातु भी मिलती है। कुछ विद्वानों का मत है कि— इसी से छंद शब्द का सम्बन्ध मानना अधिक युक्तिसंगत है।^२ संस्कृत साहित्य में देवी-देवताओं की स्तुतियों (स्तोत्रों) में प्रायः एक ही छंद का व्यवहार पाया जाता है जिसका अभिप्राय सम्पूर्ण देवी देवताओं को सुप्रसन्न करना है। राजस्थानी साहित्य में भी इस प्रकार की अनेक रचनाएँ उपलब्ध हैं, जिनको कहीं तो छंद की जाति—रसावली, भाटकी, पादड़ी, छण्य रोमक, मोतीदाम आदि—से अभिहित किया गया है और कहीं केवल छंद कह कर। इन इन राजस्थानी कवियों द्वारा देव स्तुति परक साधनों का उपयोग अपने आश्रयदाताओं की स्तुति के लिए होने लगा। राजसभाओं में भाट और चारणों द्वारा जो विस्तारवली बोली जाती थी, उसे छंद कहा जाता था—

“तिणि प्रस्तावि पापश्रुत भट्टि मदनकुमर तणा छंद बोल्या।”

तथा—“इहि अरवसरि सुश्रुत भट्टि राय विवेक तणा छंद भण्या।”

—प्रबोध चिंतामणि।

इसी प्रकार इस काल के कवियों ने अपने आश्रयदाताओं के चरित्र से सम्बन्धित अथवा अन्य चरित्रात्मक काव्यों को छंद सज्ञा से अभिहित करना पसंद किया। इन छंद सज्ञक रचनाओं में भी पूर्वोक्तिलिखित दो प्रकार उपलब्ध होते हैं—प्रथम तो एक ही छंद (मगलाचरण और कलस को छोड़ कर) में रचित और द्वितीय विभिन्न प्रकार के

१ रणमल्ल छंद छ० १

२ हिंदी साहित्य बोध पृ० २६०-६१

एवं । म रचित । २१११ रणम त एव द्वितीय प्रकार की रचना है । इसमें विभिन्न प्रकार के दश हज़ी का उपास्य किया गया है ।

‘ए’ शब्द के अनुपातरूप अर्थ के माय-माय पर्याय भेदों में एक छन्द चरित भी होता है । बहुत सम्भव है एव गजब कागो व रक्षयिताओं के समय धरती वृत्ति के मायकरण व समय वही अर्थ रहा हो । इस विषय के उपसर्ग वाक्यों—राउ जन्मी उउ एव धीहू भुभी तथा मे.० रामेश्वरी रा एव जासू रात्रा करणमिहत्रीरो एव राटोट गार गार रो एव गारण माघोगत मागामी रो एव धीहू भोभी, जगहू माहो एव सीवो, पन्मावती एव, हवसागर गोरगनापञ्चो रो एव गाङ्गु बेमी इत्यादि—के देगो पर उक्त सम्भावना और भी अधिक परिपुष्ट होती है क्योंकि उक्त वाक्यों में कवियों ने धरत कथापायक के चरित्र का विस्तार व साथ यत्न किया है ।

स्वरूप

स्वरूप की दृष्टि से रणमत्त एव धीर रसात्मक ऐतिहासिक गद्यकाव्य की कोटि में आता है । ऐसा प्राय विद्वधों—रा व वेगवताल हपद्राय ध्रुव^१ आचार्य रामचन्द्र मुन^२ श्री वेगवराम कापीराम दास्त्री^३ श्री जयतचरण हरिचरण दवे^४ डा० हरीश^५—ने स्वीकारा है, परन्तु डा० दगारथ शर्मा का मत इससे भिन्न है । उन्होंने रणमत्त एव को प्राचीन ऐतिहासिक राम अथवा रासावली-काव्य मानते हुए इसका सज्जन के सम्बन्ध में परिवर्तन की है कि—सम्भवतः सन् १३६८ में मुजफ्फरगाह गुजराती ने ईडर पर आक्रमण किया । रणमत्त ने बीरतापूर्वक उसका सामना किया । कई दिनों तक ईडर का दुग शत्रुओं से घिरा रहा । ऐसे अवसरो पर अपने मनोविनाद और शत्रुओं को विद्वाने के लिए, धिरे सतिव अनेक प्रेक्षणक और रास (हम्मीर महाकाव्य और का हड्डे प्रबन्ध में इसका उल्लेख मिलता है) किया करते थे । विवेककर सिवाहियों को जान दिताने वाली वृत्तिवा ऐसे समय में अभिनीत होती होगी । धीधर की वृत्ति शायद इसी १३६८ ई० के घेर के समय निमित्त हुई हो ।^६ डा० दगारथ शर्मा ने जिन काव्यों (हम्मीर महाकाव्य और का हड्डे प्रबन्ध) के बलून व आधार पर उपयुक्त परिवर्तन की है वह वास्तविक न होकर एक रुढ़ि सम्भावित है । जिन

१ प्राचीन गुजराती काव्य पृ० ६

२ हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० ५२

३ कविवरित भाग १२, पृ० १७

४ गुजराती साहित्य का इतिहास, पृ० ३०

५ शोध पत्रिका वष १२, अंक ३

६ रास और रासावली काव्य पृ० २४३

महा रस भग अथवा छत्र भग सत्ता से अभिहित किया जा सकता है। इस प्रकृति का उत्सवात्मक रामायण में उपलब्ध है—'सुवेल पवत पर बठे हुए राम-लक्ष्मण लका के वनव को देख रहे हैं। रावण का राज्य वनव अद्वितीय है। राम के मित्र सुग्रीव से रावण का यह वनव नहीं देला गया और वह छलाग लगाकर लका जा पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने रावण के विचित्र मकुटों को उतार कर पटक दिया। तत्पश्चात् दोनों योद्धा मल्लयुद्ध में प्रवृत्त हुए। सुग्रीव ने मल्लयुद्ध में भी रावण को खूब छकाया तथा विजयी बन कर राम के पास लौट आया।' अथवा रामायण (सग ५) मानस-रामायण नसिह पुराण रामचंद्रिका (१५/४८) और तुलसी इत रामचरित मानस (लका कांड १३) में उक्त छत्रभग का बाय स्वयं रामचंद्रजी अपने हाथों से सम्पादित करते हैं।

राजस्थानी काव्यों—पद्मनाभ—काहङ्के प्रब घ महेग—हम्मीर रासो, जोधराज—हम्मीररासो चन्द्रशेखर—हम्मीरहठ इत्यादि—में उपयुक्त प्रकृति कुछ परिष्कृत रूप से प्रयुक्त हुई है जिसमें धिरे हुए कथानायक व यहाँ राजप्रासाद में नृत्य और राग रग का आयोजन होता है। उसे देख कर घेरा डालने वाला प्रतिद्वंद्वी उद्विग्न हो जाता है। वह अपने किसी घनुधर को भागा देता है कि—उक्त रग में भग करो। घनुधर अपना कौशल दिखाता है जिससे नृत्य अनुरक्त नटी घरागायी हो जाती है अथवा उसका वार खाली चला जाता है और वह बाण सभासदों के सम्मुख आ गिरता है। कथानायक अपने प्रतिद्वंद्वी की खाल को तत्काल समझ लेता है। इतने में कोई घोर (विशेषकर घरणायत) कथानायक के सम्मुख उपस्थित होकर प्रतिपक्षी पर वार करने की अनुमति मागता है। राजा केवल छत्रभग की अनुमति दे देता है। स्वामीमत्त घोर अपने लक्ष्य पर बाण चलाता है जिससे प्रतिद्वंद्वी (बादशाह या सेनापति) का छत्रभग हो जाता है। समस्त विपक्षी दल इस घटना से सशक्त हो जाता है।

पुनः कथित रामचरित में प्रयुक्त तथा राजस्थानी काव्यों में प्रयुक्त उक्त कथानक रूढि में जो स्वरूपगत अंतर दृष्टिगोचर होता है वह केवल परिस्थिति जय है। राम के द्वारा घेरा गया रावण भूत में पराजित होता है परंतु राजस्थानी काव्यों के नायक सबल (बादशाह आदि) प्रतिद्वंद्वियों व द्वारा धिरे रहने के उपरांत भी भ्रत में विजयी होते हैं। अतः राजस्थानी कवियों ने अपने नायकों के चरित्र को उच्च चित्रित करने के लिए उक्त प्रकृति का परिष्कार कर लिया है। अतएव इस कथानक रूढि को देखते हुए डा० दशरथ धर्मा की छत्र की सजन-सम्बन्धी परिकल्पना को उचित नहीं ठहराया जा सकता।

१ बाल्मीकि रामायण, युद्ध कांड पूर्वार्ध सग ४०

यदि हा० रामो द्वारा परिष्कृत उक्त परिष्कारों को थोड़ी देर के लिए वास्तविक भाग में तो भी प्रस्तुत रणमल्ल छंद को प्रयोग प्रथम वास्तविक भाग में नहीं रखा जा सकता। क्योंकि—वेगल एक मूलधार विशेष भाष्यरूपक होता है और इसका माया कोई निम्नवर्गीय शक्ति होता है।^१ जबकि रणमल्ल छंद का माया एक कुचीन शक्ति है और स्थान स्थान पर यदि ने वगल लिए है। तेरी स्थिति में रणमल्ल छंद का वेगल एक शक्ति कोई भाष्यरूपक नहीं कहा जा सकता। रामो साहित्य पर विचार करते हुए श्री गरीशमगाम स्वामी ने स्वल्प की दृष्टि से रणमल्ल छंद को रासो घोसी की रचना माना है।^२ विचार के प्रतिरिक्त वाच्यगत अर्थ विशेषताएँ—नेति हासिकता, वचनतात्मकता, और अंत परिष्कार मनीषिक तत्वों का समावेश इत्यादि—प्रस्तुत छंद में उल्लेख हैं। अतएव रणमल्ल छंद की स्वरूप की दृष्टि से ऐतिहासिक सन्दर्भों पर स्थोकार कर लेने में कोई आपत्ति नहीं दिखाई देती है।

रणमल्ल छंद रचना, रचयिता और रचनाकाल

रचना

रणमल्ल छंद की एकमात्र हस्तलिखित प्रति पूना के डेवन कालेज के सरकारी संग्रह (No 1541 of 1891 95 Dec Col, Extent foll 54+4) में उपलब्ध है जिसे प्रकाश में लाने का अर्थ—प्राचीन गुजराती साहित्य के उद्धारकर्ता स्व० रा० व० कृष्णलाल हयदराम ध्रुव की है। जब उन्होंने बाह्यदे प्रकाश के पाठ शुद्धपथ पूना से उसकी हस्तलिखित प्रति मगवाई तो उन्हें अचरमाद्य 'रणमल्ल छंद के दशन हुए। अनुसंधितसुवर्त ने तत्काल इसके महत्व को आक निया और सन् १९२७ ई में गुजरात वर्नाक्यूलर सोसाइटी द्वारा संचालित—कबीरवर दण्डपतराम स्मारक प्रथमाळा, न० ५ के 'पदरमा दतकना प्राचीन गुजराती वाच्य' नामक सकलन में इसे सुसम्पादित करके साहित्य जगत के समक्ष रखा।

रचयिता

रणमल्ल छंद के रचयिता ने अपनी काव्यकृति के प्रारम्भ में राव रणमल्ल का सुविस्तृत परिचय दिया है परंतु अपने जीवन के विषय में कुछ नहीं लिखा। यदि पूना

- १ गभावमग रचित प्रह्लण हीन नायकम् ।
असूत्रधारमेकाङ्क मविष्कम्भ प्रवेगकम् ॥
- निपुद्धमम्पेत् मुत सव वतिसमाश्रितम् ।
नेपथ्ये सीयते नापी तथा तत्र प्ररोचना ॥

—साहित्य दण ६ १०, २०६ ८७

- २ रासो साहित्य और पृथ्वीराज रासो, पृ० २२

डेक्न कालेज के सरकारी सग्रह में उपलब्ध हस्तलिखित प्रति पर प्रतिलिपिकार ने पुष्पिका श्रीधर याम वृत रा रणमल्ल छन्द । सं० १६६२ माग ।^१ न दो होती तो यह महत्वपूर्ण काव्य एक अज्ञात कवि की वृत्ति के रूप में साहित्य जगत के सम्मत् आता । इस सक्षिप्त पर अत्यन्त महत्वपूर्ण पुष्पिका द्वारा 'रणमल्ल छन्द' के रचयिता के नाम के साथ साथ उसके व्यास होने का भी उद्बोध होता है । व्यास—ब्राह्मणों का एक उपवग, एक उपाधि और एक राजकीय पद होता है । रणमल्ल छन्द के अतगत पर्याप्त लम्बे सपथ का स्मरण^२ हिंदू सस्कृति की रक्षाय रणमल्ल को प्रकारांतर से दिया गया उद्बोधन^३ एवं 'रणमल्लो जयति भूमर्ता',^४ 'शकल मद मदनो जयति'^५ आशीर्वाचन इत्यादि उल्लेख व्यास श्रीधर को व्यास की सामान्य जाति एवं सामान्य कथावाचक की उपाधि से पथक् उद्घोषित करता है ।

श्री के० एम० मुशी^६ श्रीधर को रणमल्ल का राज्याश्रित कवि मानते हैं परंतु यह अधिक सम्भव है कि—श्रीधर रणमल्ल का राज्याश्रित कवि न होकर उसके घमाधिकारी के रूप में व्यास पद पर रहा हो । व्यास या पुरोहित सामान्यतया धार्मिक मामलों में नासक का परामर्शाता होता था । हम्मिर का पुरोहित विस्वरूप था और जालौर में सोमचन्द्र व्यास एक मंत्री की स्थिति को धारण किए हुए था ।^७ रणमल्ल छन्द में वर्णित रणमल्ल के क्रिया कलाओं को देख कर भी यही मत परिपुष्ट होता है कि रणमल्ल केवल राज्य लोभ के कारण नहीं लडा था बल्कि हिंदू सस्कृति की रक्षाय ही उसने यवनों से लोहा लिया था । कोई आश्चर्य नहीं कि उसका मूल में भी व्यास श्रीधर का प्रोत्साहन रहा हो ।

कवि की अन्य रचनाएँ

व्यास श्रीधर की रणमल्ल छंद के अतिरिक्त दो अन्य रचनाएँ वर्तमान तक पात हैं,^८ जिनका सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

भागवत दशम स्कंध इसकी एक सखित प्रति प्राचीन गुजराती के अक्षय स्व० मणिलाल बकोर भाई व्यास को मिली थी । यह केवल १२७ छंदों की अधूरी प्रति है ।

१ प्राचीन गुजराती काव्य पृ० २

२ छन्द, ३२ ३३

३ छन्द ३६ ४०

४ छन्द २

५ छन्द ६

६ गुजराती एण्ड इटन लिटरेचर, पृ० १०१

७ डा० दत्तारण धर्मा—धर्मो चौहान डाइनेस्टीज पृ० २००

८ रा० व० वेणुलाल ह० ध्रुव—प्राचीन गुजराती काव्य, पृ० ६७

सप्तशती (शीघर छंद) इगम माकण्डव पुगण के प्राधार पर सक्षिप्त देवी चरित्र का घण्टा है । यह १२० छंदों का सुन्दर काव्य है । जिसमें प्रथम एक पाठूम विकीर्ण छन्द सङ्गत में है । शेष काव्य में—चौड़ी (गान) घार्णा (वगोति), रूप, पुरबू (दोहरा), गिह्विनोक्ति सारसी (हरिगीत), हांडकी (मरहट्टा), दुपिला, मुजगप्रयात नारायण और छण्य सप्त छंदों का प्रयोग हुआ है ।

रचनाकाल

रणमल्ल छन्द' में कवि के जीवनवत्त की तरह रचनाकाल का भी उल्लेख नहीं है । घन साङ्ग से ऐसा प्रतीत होता है कि इस काव्य की रचना सन् १३६८ ई० के उपरांत ही हुई होगी । क्योंकि इस काव्य में दिल्लीपति के पराभव के लिए दो व्यक्तियों को समय माना गया है—एक तो 'गङ्गा शल्प रणमल्ल' और द्वितीय 'यम तुल्य तिमिरलिङ्ग घर्षात् तैमूर' की । तैमूर ने सन् १३६८ ई० में दिल्ली पर अधिकार करके महलों निरपराध 'पवित्रों' को मरवा डाला था । श्री के० एम० मुंशी रणमल्ल छन्द का स० १४५७ वि० में रचा जाना मानते हैं ।^१

रणमल्ल छन्द में वर्णित युद्ध

रणमल्ल छन्द भाषा, भाव एवं इतिहास की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण काव्य कृति है ऐसा सभी समालोचक समवेत स्वर से स्वीकार करते हैं परंतु छन्द में वर्णित युद्ध के विषय को लेकर विद्वानों के पृथक पृथक दो बग बने हुए हैं । प्रथम बग के विद्वान्—जिनमें स्व० रा० व० के० वल्लभ हपदगाय ध्रुव^२ श्री रामचंद्र गुक्त^३ डा० हरीग^४ और डा० शिवप्रसाद सिंह^५ प्रमुख हैं—इस छन्द में वर्णित युद्ध को 'भफरखान' से सम्बन्धित युद्ध मानते हैं । इसके विपरीत द्वितीय बग के विद्वान्—जिनमें मौ० सय^६ अयुभकर नदवी,^६ डा० दंगरथ शर्मा^७ श्री दंगरथ ओभा,^८ केशवराम काशीराम शास्त्री^९ प्रो० श्री मजुलाल मजमुदार^९ और श्री जयतकृष्ण हरिकृष्ण दवे^{१०} प्रमुख हैं— इस छन्द

- १ दे० गुजराती एण्ड इटस लिटरेचर पृ० १०१
- २ प्राचीन गुजर काव्य पृ० ३४
- ३ हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० ५२
- ४ शोध पत्रिका, वष १२ अंक ३
- ५ सूरपूव ब्रजभाषा और उसका साहित्य पृ० १२२
- ६ रणमल्ल छन्द घने तनी समय पृ० १०
- ७ रास और रासा बंधी काव्य, पृ० २४३ ४५
- ८ कविचरित भाग १२, पृ० १८ १६
- ९ गुजराती साहित्यका स्वरूपो पृ० १०७
- १० गुजराती साहित्य का इतिहास पृ० ३०

में वर्णित युद्ध को 'मलिक मुफरह, निजामशाह सुतानी, फरहतुल मुल्क रास्तोखान" से सम्बन्धित युद्ध माना है ।

उपयुक्त युद्ध को मलिक मुफरह से सम्बन्धित मानने वाले विद्वानों ने अपने अभिमत का आधार रणमल्ल छत्र में प्रयुक्त मलिकक एवं मुफरह शब्दों को बनाया है । उनकी मान्यता है कि—रणमल्ल छत्र के छद् १६ में प्रयुक्त 'मलिका मुफरह तथा छद् ४६ में प्रयुक्त 'मुफरह गठ' मलिक मुफरह के ही शीतक हैं । रणमल्ल छत्र काव्य में जिस मलिक मुफरह सुतानी का वर्णन हुआ है वह यही (मलिक मुफरह, निजामशाह सुतानी, फरहतुल मुल्क रास्तोखान) है । इसी की ही सहाई के लिए यह काव्य लिखा गया है ।^१

यद्यपि रणमल्ल छत्र में वर्णित युद्ध जैसा कि प्रथम वग के विद्वानों ने माना है पाटण क सूवेदार भफरखान के साथ हुआ युद्ध ही है पर द्वितीय वग के विद्वानों द्वारा—मलिकक, मुफरह सुतान अथवा सुदाळम, खान इत्यादि शब्दों के वास्तविक अर्थों को न जानने पर पूर्वोक्त कल्पित विभ्रम उत्पन्न हुआ है । अथवा अथ ऐसा कोई कारण नहीं है जिसके आधार पर इतिहास प्रसिद्ध रणमल्ल तथा मुफर-खान के युद्ध के बारे में संदेह किया जाय । काव्य क हिन्दी भाषा का प्रचलित करने पर यह बात भी सुस्पष्ट हो जाएगी ।

सन् १४६० में उत्कीण क भलगढ़ प्रदास्ति में इस अभिलेख—' जैतकर्ण (रण मल्ल के पिता) को मेवाड के महाराणा हुम्मीर ने अधीन किया था और हुम्मीर के पुत्र शत्रुपालसिंह ने भफरखान के दप को घूर करने वाले रणमल्ल को कैद किया था ।^२— से यद्यपि रणमल्ल का मेवाड के महाराणा द्वारा अग्रमानित होना पाया जाता है परन्तु रण मल्ल क विनोयण द्वारा यह स्पष्ट रूप से ध्वनित होता है कि रणमल्ल ने भफरखान को बुरी तरह से छकाया था । रणमल्ल की यह अभूतपूर्व विजय यदि प्रस्तुत काव्य का प्रेरणा-स्रोत रही हो तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं है ।

प्रस्तुत छद् में स्थान स्थान पर रणमल्ल को 'वर वीर'^३ अथवा वर कमधज्ज'^४ जैसे श्रेष्ठ विनोयणों से विभूषित किया गया है तथा उसको श्रेष्ठ हिंदू धर्मरक्षक हुम्मीर^५ तथा काहडदव^६ की श्रेणी का गणक स्वीकारा है । यह एक तथ्य है

१ मी० सी० अबुमफर नदवी—रणमल्ल छत्र अने तेनो समय, पृ० १०

२ विविलियोप्राफीका इडिका

३ छत्र १

४ छत्र ५४

५ छत्र ४

६ छत्र, १२

जिगजा गहने भी उल्लेख किया जा चुका है कि रणमल्ल उम जगत का प्रशासन का सम्प्रेमी और था और उमकी सहाई का निमित्त क्वस मान भगने राज्य का सोम न होकर धार्मिक भी था । १० मं रणमल्ल का हिन्दू धर्म ब्राह्मण, गाय धवनाओं और बासकों का रक्षण बना कर इत तथ्य की पुष्टि की गई है ।^१

रणमल्ल का प्रतिद्वन्द्वी भूपरमान भी गजनी के शासक से कम धर्माय न था । उसने भी सोमनाथ की प्रतिष्ठा को भग किया था व गी ब्राह्मण धामन और स्त्रियों को प्रताड़ित करता रहता था ।^२ रणमल्ल ने सगठित रूप से इसका प्रतिधा किया । अपने पत्नीस राजकुनों का सगठन किया तथा उसका नेतृत्व स्वयं ने सम्हाला । इस सङ्घर्ष पर स्वयं रणमल्ल को मय था ।^३ रणमल्ल की इच्छा समय भारत से यवनशासनोन्धेद की थी ।^४ तदनु रूप उमने प्रयत्न भी प्रारम्भ किये । विभिन्न प्रकार से तत्कालीन शासक को बध्द देना उसका प्रधान काम था ।^५ भारत ने भी उसका साथ दिया । दिल्ली की सल्तनत उर्मा-उर्मों कमजोर होती जाती थी, रणमल्ल व उसके अनुयायियों ने उपद्रव बढ़ने जाते थे । स-सतत की ओर से अतिम आश्रय युद्ध का लिया गया और रणमल्ल तथा उसके साथियों को कुचन देने का निश्चय किया,^६ परन्तु उसका नतीजा भी विपरीत ही निकला और भुकरखान को मदान छोड़ कर भागने के लिए विवग होना पडा ।^७

कुछ विद्वान (जिनम मौ० मे० नदवी प्रमुख हैं) इस युद्ध का फारसी लवा रीखा म उल्लेख न होने के कारण इसे सदेह की दृष्टि से देखते हैं परन्तु फारसी विद्वानों की यह परम्परा रही है कि जिस जिस युद्ध में स्वयं बादशाह भयवा सल्तनत की ओर स निपुक्त किसी अधिकारी को मैदान छोड़ कर भागना पडा है, उसका उल्लेख तक नहीं करते थे । अद्यावधि ज्ञात तथ्यों से भी उपयुक्त अभिमत की पुष्टि होती है ।

ऐतिहासिक ग्रंथो म गुजरात के सूवेदार भुकरखान द्वारा सन् १३६३ १३६८ और १४०१ मे ईडर पर तीन बार आक्रमण करन का उल्लेख मिलता है ।^८ रणमल्ल छत्र की पाचवीं धार्या मे रणमल्ल के साथ लैमूर का उल्लेख होने के कारण प्रस्तुत काय का

१ छत्र, ५४ ५५

२ छत्र १६ ४१

३ छत्र ३१

४ छत्र ७०

५ छत्र, ११ १५

६ छत्र, १६ १७

७ छत्र, ५६ ६१

८ श्री जोशी—ईडर राज्यनो इतिहास, पृ० १०० १०२

सजनकाल तमूर के आक्रमण सन् १३६७ के पश्चात् का ठहरता है। ग्रन सन् १३६३ वाला आक्रमण इस काव्य का विषय नहीं माना जा सकता तथा सन् १४०१ के आक्रमण के समय रणमल्ल ईडर को त्याग कर विशनगर की ओर चला गया था। इसलिए इस काव्य का वष्य विषय सन् १३६८ वाला आक्रमण ही हो सकता है, जिसमें आक्राता भफरखान को मदान छोड़ कर भागना पडा था।

रणमल्ल के अन्य युद्ध

रणमल्ल छत्र में रणमल्ल द्वारा भफरखान के विरुद्ध लडे गए मुख्य युद्ध के प्रतिरिक्त अथ युद्धो की जानकारी भी मिलती है^१, जिनमें रणमल्ल ने विजयधरो का वरण किया था—

रणमल्ल और भफरखान रुम

भफरखान फारसी बगाल का रहने वाला था। इसका स्वसुर इसी प्रात का नाजिम था। वह एकाएक शत्रुओं के हाथ से मारा गया। भफरखान वहा से दौड कर दिल्ली गया। बादशाह न उसे नायब वजीर का पद दिया। तत्पश्चात् उसे गुजरात का नाजिम बना दिया। भफरखान न लगभग आठ वर्ष तक शासन किया और सन् १३६६ म चल बसा। भफरखान की मृत्यु क पश्चात् उसका बेटा दरियाखान गुजरात का हाकिम बना। उसे भफरखान रुम का खिताब दिया गया। रणमल्ल छत्र में रणमल्ल की स्व मुख उक्ति द्वारा इसी भफरखान क पराजित होने का उल्लेख किया गया है।^२ यह घटना सन् १३७८ के आसपास की मानी जाती है।

रणमल्ल और शमसुद्दीन

शमसुद्दीन का पूरा नाम—भिया उल मुल्क मलिक शमसुद्दीन अयुरिजा था। इसकी नियुक्ति भफरखान के नायब के रूप म सन् १३७८ म हुई थी। सम्भवत सन् १३७८ के आसपास इस नये नायब ने भी ईडर पर आक्रमण किया होगा और रणमल्ल क साथ युद्ध में मुह की खाई होगी। रणमल्ल छत्र के वणन से पता चलता है कि रणमल्ल एव शमसुद्दीन का द्वन्द्व युद्ध हुआ था और उसमें शमसुद्दीन परास्त होकर भाग गया था।^३

१ भी सँ नदवी—रणमल्ल अने तेनी समय पृ १७ १६

२ दल दाहण भफरखान जयो, मिह भगउ भगइ खगरइ। छत्र ३२

३ मिह सगरि शमसुद्दीन नदी पडिमगउ अगो अगि मिडी। छ ३३

रणमल्ल और मलिक मुफरह तथा भागर के यादव

रणमल्ल छद्म क रचयिता न श्रीमुख उबिन द्वारा रणमल्ल का अथ सेनापतियों के साथ युद्ध और उत्तम विजया होने का संकेत किया है।^१ इससे प्थनित होता है कि रणमल्ल उक्त सन् १३६८ वाले युद्ध से पहले भी काफी लडाइया लड़ चुका था और उनमें विजयी हुआ था। इनमें 'मलिक मुफरह और 'भागर देश (कदाच बागड) क यादवों से लड़ी हुई लडाइया विशेष उल्लेखनीय हैं।

यद्यपि छद्म में मलिक मुफरह का स्पष्ट रूप से कही उल्लेख नहीं है फिर भी यह कल्पना सहज ही की जा सकती है कि—जब मलिक मुफरह गुजरात का सूबेदार बन कर आया होगा तब उसने भा अपने पुत्रवर्ती सूबेदारों की परिपाटी को अपनाया होगा। ईंडर हमेशा से ही सूबेदारों की आज्ञा का काटा बना हुआ था। वह प्रथम मलिक मुफरह की आज्ञा में भी खटका होगा।

यह मलिक मुफरह सन् १३७७ में गुजरात का सूबेदार बन कर आया था। इसका असली नाम रास्तीखान था। इसके पिता का नाम मलिक फत्ताहुलमुल्क था। यह फिराजखान का गुलाम था। इसे अच्छे काय करने के उपलक्ष्य में मलिक मुफरह की सहायि दी गई थी। इसने सन् १३७७ से सन् १३६१ तक शासन किया। अत रणमल्ल और मुफरह का युद्ध इसी समय हुआ होगा।^२

रणमल्ल ने ईंडर और मेवाड के बीच के भागर' प्रदेश के यादव वंशीय शासक को युद्ध में पराजित करके अपने अधीन कर लिया था और उसकी राजधानी भारणगड में पर्याप्त समय तक स्वयं न निवास किया था। तत्पश्चात् एक सोलकी पटावत को बहा रस कर स्वयं ईंडर लौट आया।^३

कुछ भ्रांतियाँ

रणमल्ल छद्म में वर्णित युद्ध की तरह कुछ विद्वानों ने और भी तथ्यगत भ्रांतियाँ परिकल्पित की हैं—

रणमल्ल की विजय के सम्बन्ध में सन्देह करते हुए भी० म० प्रबुधकर तदर्थो ने उल्लेख किया है कि रणमल्ल छद्म की पड़ते समय घोड़ा प्रकाश डालने वाली एक घण्टी घटना का उल्लेख मिलता है कि राजा की सहायता के लिए आया हुआ, राजा सतल

१ मम मोहिय मडि मलिक मुफरह, दू समरि विहारण मन्ध्र तन् १ छ ३४

२ डा रामा व डा० मोभा—रास और रागावपी काव्य, पृ० २४५

३ भी जागी—ईंडर राज्य ना इतिहास पृ० १०१

सम्भव है कि यह राजपूताने के साभर शहर का हाकिम था। यह कोई कम बात नहीं है। चांपानेर और ईडर के राजाओं के महा उनसे पहले दो सौ वर्षों से यही परिपाटी चली आ रही थी कि वे बाहर के राजाओं की मदद लेकर गुजरात के हाकिमों से लड़ते थे। असल गुजरात के सुल्तानों को अनेक बार मालवा, खानदेश और राजपूताना के दूररे हाकिमों से भयानक ही लड़ाई लड़नी पड़ती थी। इससे ऐसा मालूम पड़ता है कि ईडर के राजा की फौज कितने म से निकल कर बाहर के मदान म लड़ने लगी तभी अकस्मात् पोछे से राजा सातल की फौज भी आ पहुची। परिणाम यह हुआ कि मलिक मुफरह की फौज दो दुश्मनों के बीच आ गई और इसी से उसकी हार हुई।^१ आश्चर्य तो इस बात का है कि मी० स० नदवी सा० न सानल को साभर का हाकिम बनाया है। जबकि वह जालोर का राजा काहूडे का भतीजा था। इसका प्रतिरिक्त जो तथ्य उपयुक्त उद्धरण म प्रस्तुत किए गए हैं उनका रणमल्ल छंद म कही उल्लेख तक नहीं है। मी० स० नदवी द्वारा उल्लिखित (छंद ६२-६३ में) जालोर (स्वणगिरि) के चौहान शासक काहूडे द्वारा मुहम्मद गजनवी के कब्जे में से सीमनाथ महादेव की मूर्ति को छुना कर उसे पुन प्रतिष्ठित करने का उल्लेख हुआ है।

एक अन्य ऐतिहासिक पात्र के विषय में जानकारी देते हुए श्री के। वराम शाशीराम शास्त्री ने लिखा है कि—“अन्य ऐतिहासिक पात्र के विषय में कवि जानकारी देता है। वह मुहूडासिया मीर रहमानी है। मीर रहमानी इस समय मोडासा म पाणोनार था। वामहराम करइ सुरताणी ऐसे सुल्तान का वेतन खाकर कुछ भी नहीं कर सकता था।^२ शास्त्रीजी यदि उपयुक्त उल्लेख करते समय मून पाठ को अच्छी तरह से देख लें तो उक्त भ्रांति की कोई सम्भावना नहीं थी। शास्त्रीजी द्वारा उद्धृत मूल पाठ मुहूडा सिया मीर रहमानी है जिसका अर्थ होना है—(रणमल्ल न) सिया रहमानी मीरों को पराजित कर दिया और वह सुल्तान के दानों (Tribute) को मट कर रहा है। यदि मून पाठ में मुहूडाया मीर रहमानी शशोजन (जो कि उचिन प्रतीत होता है) स्वीकार कर लिया जाय तो ऊपर का अर्थ और भी अधिक स्पष्ट हो जाएगा।

१ मी स नदवी—रणमल्ल छंद अने तेनो समय, पृ० १५ १६

२ कविचरित, भाग १ २, पृ० १८ १९

रणमल्ल छंद की भाषा

रणमल्ल छंद की भाषा प्राचीन राजस्थानी है। इस कुछ विद्वानों ने जूनी गुजराती भी कहा है। रणमल्ल छंद के सजन काल में वर्तमान की तरह राजस्थान एवं गुजरात के प्रदेशों में भिन्नता नहीं थी। राजकीय प्रशासनिक सीमा क्षेत्र को छोड़ कर सामाजिक एवं साहित्यिक दृष्टि से दोनों प्रदेश एक थे। सुदूर अणहिलपुर से भरमौर तक एक ही भाषा का प्रयोग होता था। वर्तमान तक उपलब्ध दोनों प्राचीन प्रदेशों का लिखित साहित्य एक ही है।

रणमल्ल छंद के रचयिता व्यास धीधर संस्कृत प्राकृत भ्रमभ्रश देशीय भाषा के विद्वान थे तथा विदेशी भाषा (पारसी) की भी उन्हें जानकारी थी। अतः उनकी कृति में उक्त सभी भाषाओं का प्रयोग 'यूनाधिक परिमाण में मिलना स्वाभाविक है। छंद की प्रथम दश धाराएँ विशुद्ध संस्कृत में हैं तत्पश्चात् का वर्णन यद्यपि देशीय भाषा में है, परंतु उसमें परिनिष्ठित प्राकृत भ्रमभ्रश की शब्दावली का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं—

स्वर विकार

घ	घा—भ्रमवार भ्रासुर (असुर) घल भ्रसलीइ ।	छंद	२५
ई	इ—डोल गहिर (गभीर) डमकत ।		२२
उ	उ—मुल्लइ विरद (विरद) बहून ।	'	५०
ए	ए—तु रणमल्ल इक्क (एक) नह चडू ।	"	११
ओ	उ—हसि हुसियार (होशियार) हुया हल हल करि ।	'	१८

ध्यजन विकार

ख	ह—मूख सिहरि (शिखर) फरकत ।	छंद	२०
	—तिम तिम ईडर सिहर (गिहर) वरि ।	"	२२
घ	ह—निहुटि (निपुट) घाटि बाढ गढ घल्लि ।		१७
भ	ह—भसूहज (अणुम) ईडरद ।	'	२०
	—सुहड (सुमट्ट) सद् समळिवि रउहूह ।	"	५६
ष	ह—तिम तिम योगिनि रुहिर (रुधिर) रसि ।	'	५६

श	ह—दह (दश) दिसि फिरवि करि पुक्कारह ।	छ	४६
	—दह (दश) दिसि पडरवेस पल्लट्टिय ।	"	१७
ग	य—निसि स्वभाइचि नयर (नगर) उधकइ ।	"	१४
	—तु गयखगणि (गयनागण) भाण न उगइ ।	"	२६
	—सायर (सागर) वेलि तरग ।	"	५१
द	य—मुक्क सिर कमल मेच्छ पय (पद) लगइ ।	'	२६
ट	ड—सुहड (सुमट) सह समळिवि रउहह ।	'	४६
ति	इ—जिम हम्मीर वीर सिभरवइ (सभराधिपति)	'	१२
न	म—रणमल्ल दिट्टेण ते ठाम (स्थान) चुविक ।	"	६७
प	व—जिम हम्मीर वीर सिभरवइ (सभराधिपति)	"	१२
व	व—रे रणमल्ल घाडि जव (जब) सभळि ।	"	१४
यु	जु—उल्लाळवि भालवि जुज्ज (युद्ध) कमालह ।	"	५२
त्स	च्छ—मू गळ मेच्छ मुहइ मच्छर (मात्स्य) भरि ।	"	१८
द्ध	ज्ज—उल्लाळवि भालवि जुज्ज (युद्ध) कमालह ।	"	५२
ध्य	ज्जि—मलिक मत्र मज्जिम (मध्यम) निसि विद्धउ ।	"	२७
ब्द	ह—रउह सह (शब्द) घा समुह साहितिक सूरइ ।	"	४१
म्ले	मे—मू गळ मेच्छ (म्लेच्छ) मुहइ मच्छर भरि ।	"	१८
द्र	ह—रउह सह घासमुह (घासमुद्र) साहितिक सूरइ ।	'	४१
द्रष्ट	दिट्ट—गोरो बळि गाहवि दिट्ट (द्रष्ट) दहदिसि ।	"	५८
दुग	दुग—ईडर अडर दुग (दुग) तळ गायु ।	'	४६
दुजन	दुज्जण—दुज्जण इक्ख इक्क दावानळ हयमर ।	'	५७
र	×—सतिर सहस (सहस्र) साहणवइ साहण ।	"	११
न	ण—पुण (पुन) फुरमाण (फरमान) भाण सुरताणी	'	१२
	—लखि फुरमाण (फरमान) खान चल्लावि ।	"	१६
	—रहिउ हई हैराण (हैरान) खु दालम ।	"	१६
	—दुज्जण (दुजन) इक्ख इक्क दावानळ हयमर ।	'	५७
	—वेडि करि गज्जणवइ (गजनीपति) असुरइ ।	'	६२
स्क	क—ता कमघज्ज कघ (स्कघ) न घगळ नमइ ।	'	३०
स्त	त्प—तू हट्टि उट्टवणीइ हट्ट विनोह हरय(हस्त)लिज्जइ ।	'	
स्था	य—आदर करि सकर धिर थणिय (स्थापिता) ।		६३
स्था	ठा—रणमल्ल दिट्टेण ते ठाम (स्थान) चुविक ।	'	६७
स्थि	यि—आदर करि सकर धिर (स्थिर) थणिय ।	"	६३
ष्टि	ट्टि—मुट्टि (मुष्टि) दळ धलनइ ।		२६

ह्य म—बंभण (प्राज्ञाण) यान यन् बहु कीर्तिः । छन्द ४०
 दि रि—सु रणमन्त्र इव मह क्षिति (दिनि) । " १२
 वा, प स—सर्वत्र प्रयुक्त ।

रणमल्ल छन्द की भाषा में जो सबसे बड़ी विशेषताएं उल्लेख्य हैं वे हैं—
 विभक्ति रहित कारक एवं कारकों के लिए सम्बन्ध सूचक अव्ययों अथवा परसर्गों का प्रयोग । यही विशेषताएं इस भाषा को प्राकृत एवं अपभ्रंस भाषा से पृथक् प्रमाणित करती हैं । यद्यपि निर्विभक्ति कारकों का प्रारम्भ अपभ्रंशोत्तरकालीन अवद्वन्द्व में हो गया था परन्तु पश्चात्तर्ती आद्यभाषाओं (विशेषकर राजस्थानी भाषा) में इसका प्रचलन बहुतायत से पाया जाता है । रणमल्ल छन्द में अथ विभ्रम से बचने के लिए यद्यपि जो सम्बन्ध सूचक अव्ययों अथवा परसर्गों का व्यवहार किया है वह भी राजस्थानी भाषा के अव्ययों अथवा परसर्गों के प्रति निकट है । उदाहरणाय कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं—

(अ) निर्विभक्तिक कारक

- कर्त्ता—पुत्रकारि मीर मल्लिक मुकरद । रणमल्ल छन्द १६
 —तिम तिम रणमल्ल रोस मरि । ' २४
 —गय खान खुद नगति छलिय । २६
 —उच्चरहि सरस महुपर भुण्ड । स देग रासक २१६
 —चारण कहइ । —अचलदास खीवीरी बचनिका
 —देव दाणव लडि मूपा । —राठौर रतनसिध महेशदासोतरी बचनिका
 —जाणे बाद माडियो जीपण वागहीण वागेसरी ।
 —बेलि सिरि किसन हकमणी री ३
 —परसे जसोदा जिमे चक्रपाणी ।
 —नागदमण २
 कम—पर धर घाणदार हरि कम्पइ । —रणमल्ल छन्द १३
 —हेला लाख्यद बुल्चावि । १६
 —अचल राज चहुआण समल्पिय । ६३
 —सिहि चडिउ विक्खि मायद साह । —स देग रासक— २१२
 —हस्ती मेलि चाल्यउ । —अचलदास खीवी री बचनिका
 —कवि रजपूत पोखिया बाले ।
 —बचनिका राठोड रतनसिह महेश दासात री ।
 —परमेसर प्रणवि प्रणवि सरसति पुनि ।
 —बेलि सिरि किसन हकमणी री १

—जावो नागणी माग वगो जगाडो ।

—नागदमण ३७

करण —

—पक्षरि पक्षर पवन पली । —रणमल्ल छद २५

—सवि रणमल्ल वरइ साह सिहुलि । ' ३८

—जल रहिय मेह सतविअ काइ । —स देश रासक ११८

—विधि अणि गयो छग ।

—बचनिका राठीह रतनसिध महेसदासोत री ।

—जाणे वाद भाडियो जीपण वागहीण वागेसरो ।

—बेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री ३

—गळं अघ्न घोषा खुरी खेह भ्रवा । —नागदमण ६१

सम्ब ध—

—मू छ सिहरि फरकत । —रणमल्ल छद २०

—भुजबलि सबल मुट्टि दळ घलई । " २६

—करी चाकरी खान कर जोडिअ । " २८

—जइ रणमल्ल पाम इम बुल्लइ । " २७

—हिव पट्टण पदरि धरि सुपय । " ३२

—सव पेक्किसि मुह रणमल्ल बन । " ३५

—अगिहिं तुह पलहत घिट्ट करयल फरिमु ।

—सदेश रासक १६१

—मुह सति भोलग चन नावइ । —रावल बेल २३

—कामणि करण सु बाण कामरा ।

—बेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री २३

—धरधर अ ग सधर सुपीन पयोधर । —वही २५

—सत्री कटका कस रैपत सासी । —नागदमण ७४

अधिकरण—

—फुगराई फुफु फार फारक फौजफरि फरमाणिया। —रणमल्ल छद १६

—पडर वेस थया निव्भय धर । " ४०

—जइ विम्म विओइ विमुठ लय हियय । —सदेश रासक ११५

—तुछे फून तारे मण हारे । —रावल बेल २० २१

—जीह जीह नव नवो रस । —बेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री ५

—इसो भाज ते कोण भूलोक याछे । —नागदमण ५०

रणमल्ल छद

सबोधन—

—अरियणदारण । वोन अभयकर ।	—रणमत्त छ	४
—विताह जोह तेहि नाथ ।	"	४
—पा कमघउज धार करि तिउबइ ।	'	४
—ता पहिय कम गिति समए पाविउबइ निम्बुइय तह गिहा ।		
	—सदेग रासक	११
—पहिउ भणइ कणयगि समयु ज तुग्दि कहिउ ।		
	—वही	११
—३यू धारहट ।		
	—बचनिका राठोइ रतागिय महेशमोत री ।	
—घळिय घण मूभ स्वाळ सिप बळि ।		
	—वेमि सिरी किसन दकमणी री	५१
—प्राणी बघइ त वेमि पडि ।		
	—वही	२७८
—बहे कीजिय का हू भीरु विभाग ।		
	—नागदमण	६

(आ) सम्बन्ध सूचक अव्यय अथवा परसग

वत्ति—

इ—मिह सगरि सममुहीन बडो ।	—रणमत्त छद	३१
—आरभ में कियो जेण उपायो ।	—वेमि सिरी किसन दकमणी री	५१

कम—

अ—इम बोल्लइ हठि तोलत ह्य ।	—रणमत्त छद	३६
इ—चचलि बडी चिहू दिसि बगइ ।		१३

करण—

इ—भुजबळि तबल मुट्टि दळ पलई ।	—रणमत्त छ	२६
—घसि घगदायण पूरा धरतु ।	,	५६
—झडपइ षडवड घगड विडा ।	,	६१
—गोरी बळि गाह्वि ।		५८
—जब हेजब मुहि परिमाद मुणी ।	,	३७
—किरि कठरीन पूतळी निज करि ।		

—वेमि सिरी किसन दकमणी री २

अवि—हल एम्मार हबकारिय मुल्लवि ।	—रणमत्त छ	२६
---------------------------------	-----------	----

—सिरि फुरमाण घरवि सुरताणी ।	—रणमल्ल छद	२८
करि—भडहड करि सतिरि सहस भडववइ ।	'	६१
—मुख करि विमू वहीजे माहव ।		
—वेलि सिरि क्रिसन रुकमणी री		६४
रसि—असि रसि गाह करइ गोरी दळि ।	—रणमल्ल छद	५७
—तिम तिम योगिनि रहिरि रसि ।	"	४२
—जिम जिम लसकर लोह रसि ।	'	४४
वडी—भरडी मू छ वडी मुहि मडइ ।	'	६४

सम्प्रदान—

इ—सचरीय सव सुरताण साहण साहमी सवि सगरइ ।	—रणमल्ल छद	१६
—चमविक चलि रणमल्ल भल्ल फेरि सगरि ।	'	४५
—हर तिणि वदे गवरि हर ।	—वेनि सिरि क्रिसन रुकमणी री	२६
—सामि कामि भजिमे देहा ।		

—वचनिका राठीड रतनसिध महेसदासोन री

छळि—वरकमघज्ज धीर मासन छळि ।	—रणमल्ल छद	५४
—वमण बाल सुरहि भवला छळि ।	"	५५
—छट करइ छत्तीस छळि ।	"	६०
—टीलो राज घरा छळतोनु ।		

—वचनिका राठीड रतनसिध महेमत्तासोत री

—जसवत छळि पोने जुडणि ।	—वही	
------------------------	------	--

अपादान—

सरिसु—असपति सरिसु विवाद ।	—रणमल्ल छद	४२
—पडरवस सरिसु रणि ।	"	५८
—असपति सरिसु साह सिम बववइ ।	'	६३
—मेच्छ सरिसु गहगाह न छ डइ ।	"	६४
इ—वेडि करी गज्जणवइ असुरइ ।	'	६२

सम्बघ—

इ—जव कठिसि हठि हवक्त रणि ।	—रणमल्ल छद	३४
—जव चपिसि ईडर सिहरि तल ।	"	३५
ह—गई धरदास पासि सुरताणह ।	—रणमल्ल छद	११
—तिम रणमल्लह रोस यमि ।	"	२०
—छत्तीम फुलह वन गरिमि घणु ।	'	३१

—वस्ताद्वि भातवि जूम्न बमालह ।	—रणमल्ल छ	५३
तणु—पय मग्गिणु रा हम्मोर तणु ।	'	५१
—ह समरि विहारण मेच्छ तणु ।	'	३४
—बहण तणो निर्ण तणो कीरतन ।		
	—वेति तिरि क्रिया दामणी री	७
—रासो रणाअर तणो ।		

—वचनिका राठोड रतनसिध महेसदासोनरी

रइ—मिइ भगउ अगइ सगरइ ।	—रणमल्ल छ	३२
-----------------------	-----------	----

अधिकरण —

इ—तिम बमघउअ मू छ मुहि नुरवइ ।	—रणमल्ल छ	१२
—वेसि दिसि दिसि दइवइइ ।		२१
—सिरि फुरमाण धरवि सुरताणी ।		२८
—मल्लिक मन्न मग्गिम निसि विउउ ।		२७
—बवण रक करि मेह कर ।		

—वेति तिरि क्रियन हकमणी री ६

—त्रिण दोध जनम मुल्लि दे जीहा ।	—वही	७
---------------------------------	------	---

—गाजे द्वारि गयदो ।

—वचनिका राठोड रतनसिध महेसदासोनरी

आ—जि जुद्धा मुडुद्धा सनद्धा भजाडि ।	—रणमल्ल छ	६८
इय—खित्तोय रोस बलि ।	'	६०
तलि—घघलि धगइ धरइ धरणी तलि ।		३६
—ईडर अद्धर सिक्खरि रणधमरि तलि ।	'	५०
—खग ताल जिम तोलइ करतलि ।	'	६५
ह—असह चडि चल्लिउ ।		२७

सवनाम

(१) हू=मैं ।

कर्त्ता—हूँ समरि विहारण मेच्छ तणु ।	—रणमल्ल छ	३४
कम—मिइ भगउ अगइ सगरइ ।	'	३२
—मिइ सगरि समसुद्धीन नडी ।	'	३३
—मम मोडिय मडि मल्लिक घणु ।	'	३४
सम्ब ध—मुञ्ज सिर कमल मेच्छ पय सगइ ।	"	२६

—सब पक्किसि मुह रणमल्ल बल ।	रणमल्ल छ	३५
—मम बरणमि मुणासिम दुन मुट्टि ।	'	३५
(२) तू = तू		
कर्ता—तू हट्टि उट्टवणीइ हट्टवि ।	"	४३
सम्बन्ध—तू रणमल्ल इक्क मह बडू ।	"	११

(३) नि = जो		
कर्ता—जि बु वास बु वा उतविक मळविक । इत्यादि		
	छ ६६ ६७, ६८ ६९	

(४) स = वह		
कर्ता—तव हेजब फुरमाण स दिट्टठ ।	—रणमल्ल छ	२७
—रणमल्ल टिट्टेस ते ठाम चुविक ।	"	३७
सम्बन्ध—विट्टोहि जोई तेह नाथ ।	"	४१

क्रिया तथा कृदन्त

वर्तमान काल—

अइ—सचरइ सक सुरताण साहसी मवि मगरइ ।	—रणमल्ल छ	१९
—तोलइ तरळ तुधार ।	"	२४
—पसरइ पडर वेम भयकर ।	"	३८
—धा कमघज घारि करि लिज्जइ ।	"	४०
—कचि काठिहि सोहइ । लोकह ची दिठि माठ ची खोहइ ।		
	—राउल बेल	७
—वसुपा षळि षळि जळ वसइ ।		

—बेल सिरी किसन रुकमणी री, १९७

रमै सग गोवाळिया रग रातो । —नागदमण ११

—मीह बवडही न लहइ । —अचळदास खीचीरी बचनिका

विशेष—छद म प्रत्यय दग्गनात्मक घरण होने से वर्तमान कालिक क्रियाओं की बहुतायत है जिनमें 'अइ' प्रत्यात क्रियाओं का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में हुआ है।

ऊ—पुणू रणरस जाण जरइ जडो । —रणमल्ल छद ३१

—वासाणू कमघज्ज पुट्टवि राजा छत्रपती ।
—बचनिका राठोड रतनसिंह महेम दोसोतरी १

—बन वो सान्तर वरणचू । —नागदमण १

अन—मू छ सिहरि फुरकत L —रणमल्ल छ २०

—किसन पघारपा लोव कहति ।
—बेनि सिरी किसन रुकमणी री ७२

प्रतु—गवपरि पण्डरवस भिड तु, घसि घगढायण घ स घरतु ।

—रणमल्ल छद ५६

भूतकाल—

अ—सकदळ बहु दिसि विद्ध डहल्लिम । —रणमल्ल छद २६

घड—मल्लिक मत्र मज्जिम निसि किद्धउ तव हेजव फरमाण स विद्धउ ।

—रणमल्ल छद २७

घा—हसि हुसियार हुया हन हल करि । —रणमल्ल छद १८

—हय ढेडवि सवि हेजव गया । ' ३६

—हयमर वेगि गया ईडर तळि । ' ३८

—वहि चलिन मल्लिक सलाम किया । ३६

—पडर वेस थया नि भय धर । ' ४०

—केवाणा पाई सुगह किया ।

—यलि सिरी क्रिमन रकमणी री १२७

—केयिया दळ तडळ जेणि किया ।

—वचनिका राठीड रतनसिह महेशदासोत री १२७

—विधि ऐणि गयो लग क्रीति वरे । —वही

—उळिगाणा भागी हुवा । —अचळगस सीधीरी वचनिका

—प्रभू घणा चा पाडिया । नागमण २

इ, ई—गई अरदास पासि सुरताणह । —रणमल्ल छद ११

—सवि फुरमाण खान चल्लावि । १६

—तव चमकि डमकि मल्लिक करी । ३७

—घसि घाडिद घायउ घूस घरी । ३७

—जव हेजव मुद्दि फरियाद सुणी । ३७

—चमकि सल्लि रणमल्ल । ४५

—घसपनि दळ बोलाहन समळि । ४५

—व्यारि जुगि क्या रही वेव्याय बालमीक वही ।

—वचनिका राठीड रतनसिह महेशदासोत री

—स्वामी बगव आयी मुण । —अचळगस सीधीरी वचनिका

—पुटी न र नीवार आयी प्रहृ । —नागमण ७

इउ—ईडर गडि घसइ घडि घल्लिउ, उइ रणमल्ल पासि इम बुल्लिड ।

—रणमल्ल छद ५६

—नाम मिळिउ हरि उम तग निम । —रणमल्ल छद २७

घट—मिहू भगउत घगइ खगरइ ।	—रणमल्ल छद	३२
उ—गयु खान खुद नग तळि चल्लिम ।	"	२६
—खान सवास खेलि बलि घायु ।	"	४६
—ईडर अडर दुग्ग तळ गाहचू ।	"	४६
म—हय हय हुकारवि हयमरि चडय ।	"	५८
प्रता—जि बक्का भरक्का सरक्का बहता ।	"	६६
—जि सबा सगब्बा भरब्बा सहन्ता ।	"	६६
प्रतिअ—हन हल बिगरी बिगरी बोलतिअ ।	"	५१
अतु—पक्करि पडरवस भिडतु ।	"	५६
—घसि घगढायण घूस धरतु ।	"	५६
घाणी—गह गुज्जार निमाज करानी ।	"	४८
विशय—अई व अई प्रत्यात भूतकालिक क्रियाओं के रूप भी उपलब्ध हैं ।		

भविष्यत् काल—

मइ अई—मुझ मिर कमल मच्छ पय लगइ तु गयणगणि भाण न उगई ।

—रणमल्ल छद २६

—जा अबर पुडळि तरणि रमइ ता कमघज्ज न घगड नमइ ।

वरि बडवानळ तण भाळ समइ पुणमेच्छन आपू चास किमइ ।

—वही, ३०

ऊ—पुण मेच्छ न आपू चास किमइ ।

—रणमल्ल छद ३०

इसि—मम वरणिंसि मुणमिम दूत मुहि ।

" ३५

—जव चपिसि ईडर सिहरि तल ।

" ३५

—तव पेक्खिसि मुह रणमल्ल बल ।

" ३५

—जव ऊठिसि हठि हुक्क रणि ।

" ३४

—जव मडिसि मुझ रणमल्ल सम ।

" ३३

—तव देखिसि तसकरि सरिसु जम ।

" ३३

—तइ सठ हयियार पाविठ बाध्थदेठ जगही काइ करिसी ।

—राउलवेल ३२

—राए लगइ पड राडवळि वीरजी बख्खाणिसी ।

—अचळणस खीची री वचनिका

—बाउ रहिसी ।

वचनिका राठीइ रतमसिह महेमदासोत री

—तरं घाविजो जागसी जाम श्रीज ।

—नागदमण ६६

इनु—इत्तोस बुलह बल करिसु भगू ।

—रणमल्ल छद ३१

- पय मग्गिसु रा हम्मोर तरणु ।
 —नद विनडिसु सत्तिरि सहस सय ।
 —हिव करिसु धरा रणमल्ल मय ।
 —रि कहिसु तामु जमु अहि पाको कहि ।

रणमल्ल छत्र ३१
 ३२
 ३६

—वेलि सिरी कित्तन चक्रमणी री २७२

प्राज्ञायक—

- दइ—दहु दिसि पडरवेस पलट्टिय ।
 इ—निहुटि बाटि काटि गण घल्लि ।
 —बल बुल्लिय बरिल मल्लिक कहि ।
 अइ—घा कमघज्ज धार करि लिज्जइ ।
 —मेच्च लोडि लिज्जइ ।
 —सोह हत्थइ लिज्जइ ।
 —सोहि गाहन किज्जइ ।

रणमल्ल छत्र १७
 " १७
 , ३५
 , ४०
 , ४१
 , ४३
 , ४३

सयुक्त—

- ईडर गडि अस्सइ च्चडि चल्लिउ ।
 —मेच्च लोडि लिज्जइ ।
 —सोहि गाहवि किज्जइ ।
 —दहु दिसि लिखी करि पुक्कारह ।

रणमल्ल छत्र २७
 , ४१
 , ४३
 ४६

अवयव-क्रिया विशेषण

(घ) कालवाचक

- हिव=घभी—हिव पट्टणिय पट्टरि धरि सुपय ।
 —हिव किरमाल पट्टारि ।
 तव=तव—तव देविसि लसकरि सरिसु जम ।
 —तव न गरणु णण सुरताण तणिय ।
 —तव वेविसि मूह रणमल्ल बल ।
 —तय चमविकु डमकिर मल्लिक करी ।

रणमल्ल छत्र ३२
 , ७०
 , ३३
 , ३४
 , ३५
 , ३७
 , ३४
 , ३४
 , ३५
 , ३७
 , ३०

- जव=जव—रे रणमल्ल घाडि जव समळि ।
 —जव मडसि मुम रणमल्ल सम ।
 —जव ठठिसि हठि हक्कत रणि ।
 —जव चंपिसि ईडर सिहर तल ।
 —जव हेजव मुद्धि करिया सुणी ।

जां=जव तव—जां धवर पुङ्ग तनि तरणी रमइ ।

रणमल्ल छत्र

ता=तव तव—ता कमघञ्ज न घण्ट नमई ।	रणमल्ल छ	३०
(ग्रा) स्थानवाचक		
भगई=भागे—भिइ भग्गउ अग्गइ खग्गरइ ।	"	३२
जा=जहा पर—जा रणमल्ल रोस वसि उट्टिय ।	'	६४
(इ) परिमाणवाचक		
घणू =बहुत—छत्तीस कुलह बल करिमु घणू ।	'	३१
—मम मोट्टिय मडि मल्लिक घणू ।	'	३४
बहु = ,—बहु बलवाक करइ बाहु बलि ।	'	३६
—बभण बाल वदि बहु किज्जइ ।	'	४०
बहुत्त = ,—बुल्लइ विरद बहुत्त ।	"	५०
मफरद=एकाकी—फुकारि मीर मल्लिक मुफरद ।	'	१६
—धममस घूस करइ मफरदइ ।	"	४६
अनेकि=अनेक—इव अनेकि मल्लिक विहइइ ।	"	६५
सवि=सव—साहमी सवि सगरइ ।	"	१६
—अगर गरास दास सवि छाट्टिय ।	"	२८
—अय हेइवि सवि हेइव्व गया ।	"	३६
—सवि रणमल्ल करइ साह सिहुलि ।	"	३८
(ई) रीतिवाचक		
इम=इस प्रकार—इइ रणमल्ल पाम इम बुल्लित ।	रणमल्ल छद	२७
—इम बोलइ हठि तोलत हय ।	"	३६
किमइ=किमी मी प्रकार—पुण मेच्छन आपू चास किमइ ।	"	३०
जिम=जिम प्रकार, जस—जिम हुम्मीर बीर सिभरवइ ।	'	१२
—समुहरि जिम चमकत ।	२०, २२	
—जळहर जिम सीगणि गुण गज्जइ ।	'	३६
—ताल मिलित हरि जभ तणउ जिम ।	"	५६
तिम=उसी प्रकार, वसे—तिम कमघञ्ज मू छ मुहि मुरवइ ।	"	१२
—तिम रणमल्लह रोम वसि ।	'	२०
जिम जिम=ज्यों ज्यों—जिम जिम कमघञ्ज चीतवई ।	'	४२
—जिम जिम सतकरि सोह रणि ।	"	४४
तिम तिम=बसे-बसे—तिम तिम ईइर सिहर वदि ।	'	२२
—तिम तिम योगिनि र्हिर रसि ।	'	४२
—तिम तिम समरि बटविय ।	'	४४

निरंतर—सतत—पर दोहरा कहि निरंतर : रणमल्ल १० १८

(उ) अथ

- म=मही—तु वयंतति माल १ आनंद । २६
- तुल मेवत म आतु भाग विवदः । ३०
- मथ म गित्तु नग मुरनाम तमि । ३४
- मइ=मीर—नइ विविदिगु मतिरि सहम सर्वे । ३२
- मह=मही—तु रणमल्ल इवत मट्टु बद्ध । ३१
- बळ=गुरा — षळ बुत्तिम वत्ति मग्गिण कहि । ३३

विशेषण

(घ) गुणवाचक

- अमग (५१) अतनीई (२५), पनी (६६), तरळ (२४)
- वाहग (३२) दुदम (४३) मयहट (३०) मारिअ (२६) मइ (५२)
- मल्ल (५३) टोहरमनि (६१)

(ङा) शरणावाचक

- इवत (११ ५४, ५७ ६५, ७०), अण (३४) विह (१३) तव
- (५४) मट्टु (४६) सतिरि (११ ४६) छनीम (३१ ६०) सितरविदि
- (५२) सहत (११, ४६)

विशेष—पुरुष तथा निजवाचक शब्दनामों को छोड़ कर अ म शब्दनामों का प्रयोग विशेषणवत् पाया जाता है ।

रणमल्ल छंद का साहित्यिक महत्त्व

काव्यत्व

इतिहास एवं भाषा के सहस्र साहित्य की दृष्टि से भी रणमल्ल छंद एक उत्कृष्ट कृति है। शास्त्रीय दृष्टिकोण से यह खडकाव्य की कोटि में आता है। खडकाव्य भी प्रबन्ध का य का ही एक भेद है परन्तु इसमें महाकाव्य का सा विस्तार नहीं होता बल्कि नायक के जीवन से संबंधित किसी एक घटना का वर्णन रहता है। शास्त्रकारों ने काव्य का विश्लेषण करते हुए खडकाव्य का लक्षण इस प्रकार दिया है—

खडकाव्य भवैत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च ।^१

अर्थात्—काव्य अथवा महाकाव्य के कतिपय लक्षणा से युक्त जो पद्य प्रबन्ध है उसे खडकाव्य कहा करते हैं। रणमल्ल छंद में काव्य अथवा महाकाव्य की कतिपय विशेषताएं उपलब्ध हैं। यथा—

- १ नायक धीरोदात्त गुणों से युक्त एक कूलिन क्षत्रिय राजा है।
- २ समस्त काव्य वीर रमावित है।
- ३ इसका कथानक विजुद्ध ऐतिहासिक है।
- ४ विजय की फल के रूप में प्राप्त है।
- ५ प्रारम्भ में नमस्कारात्मक एवं आशीर्वादात्मक मंगलाचरण विद्यमान है।
- ६ युद्ध का सांगोपांग वर्णन हुआ है।
- ७ काव्य का नामकरण नायक के नाम पर हुआ है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण पर दृष्टिमान करने से रणमल्ल छंद का खडकाव्यत्व असंदिग्ध प्रतीत होता है।

युग चित्रण

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब कहा जाता है। इससे स्पष्ट है कि कवि तत्कालीन समाज का प्रतिनिधित्व करता है। वह समाज में परिब्याप्त अन्धकारों एवं बुराईयों से प्रभावित होकर ही काव्य प्रणयन के लिए अग्रसर होता है। यदि वह कवि अपने युग की स्थिति से सतुष्ट होगा तो उसकी प्रशंसा करेगा, और असंतुष्ट होगा तो उसके प्रति क्षोभ प्रकट करेगा। इस प्रकार दोनों स्थितियों में कवि की कृति में युग का प्रतिबिम्ब अनिवार्य रूप से दृष्टिगोचर होगा।

१ विश्वनाथ—साहित्यरत्न, पृष्ठ परि० ३२६

रणमल्ल छद्म का सत्राजान सामाजिक, धार्मिक तथा साहित्यिक दृष्टि सशक्ति प्राप्त था। उस युग की परिस्थितियों और घातक घनमान की परिस्थितियों को घातकों से भिन्न थे। यद्यपि भारत का पर्याप्त भूमि पर मुगलमनों का अधिकार। गया था फिर भी रणमल्ल जंगे स्वातन्त्र्य प्रगती मरेगों की कमी नहीं थी। मुसलमान शासकों को यह समझ था तथा वे इन प्रकार के शासकों को हर सम्भव स्वयं का के लिए प्रयत्न करते रहते थे। उनकी इस राज्य विस्तार लिप्ता की गिकार स्वातन्त्र्य प्रमी शासन की प्रज्ञा होती थी। छद्म म युद्ध मन्त्री मत्त मुगल सैनिकों द्वारा पीड़ित प्र का घणन हुआ है। प्रजाजन घपन सरक्षक शासक के समस्त पुकार करते हैं—

बिबहर भरि बु वारव बज्जइ जळहर जिम सीगणि गुण गज्जई ।
 बहु बलराव बरइ बाहुन्जलि, घघलि घगड धरइ धरणी तळि ॥
 अरियणदारण ! दीन अभयकर ! पडरवेस थया निवभय धर ।
 वभग ताल वदि उहु विज्जइ, धा कमधज्ज ! धार करि लिज्जई ॥

रउद् सद् घासमुद् साहसिकक सूरइ ।
 कठोर धोर घोर छोर पारसिकक पूरइ ।
 अहग गाम गेह गाहि गालिबाल विज्जइ ।
 बिछोहि जोइ तेह नाथ ! मेच्छ लोडि लिज्जइ ॥

उपयुक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि—तत्कालीन घातताई मुगल सैनिकों के लिए ग्राम व निवासों को जला देना मंदिर व मठों को नष्ट कर देना ब्राह्मण व अबलाओं को बंदी बना लेना तथा मारकाट करना एक सामान्य बात थी।

स्वातन्त्र्यप्रेमी हिन्दू शासक अपने राज्य जीभ को गीण समझ कर गी, ब्राह्मण अबलाओं एवं सस्कृति की रक्षा को प्रधानता देते थे। छद्म म स्थान स्थान पर इस प्रवृत्ति का उल्लेख हुआ है। सीमित साधन होने हुए भी रणमल्ल के 'मुक्त सिर कमल मेच्छ पय लगइ तु गयणज्जणि भाण न उगइ कथन म सस्कृति पोपक तत्वो को देखा जा सकता है। इस प्रकार के शासक यथावसर मुगल शासन से अनुशासित प्रजा को लूटना विभिन्न स्थानों के घानेदारों को भगा देना तथा राजकीय कोष को लूट लेना अपना कर्तव्य समझते थे। छद्म के प्रारम्भ म इसका बखान उपलब्ध है।

इस प्रकार रणमल्ल छद्म के सन्निव वखान मे भी तत्कालीन युग की विभिन्न परिस्थितियों की भांकी दृष्टिगोचर होती है।

रस

रणमल्ल छद्म म एक युद्ध चरितात्मक काव्य होने के नाते वीररस का पाया जाना स्वाभाविक ही है। परन्तु इसम जिस प्रकार से वीररस की निवृत्ति हुई है 'अथ काव्यों

में दुलभ है। कथा का श्रीगणेश रणमल्ल के वीरतापूर्ण चरित्र के साथ होता है। पाठक उसकी प्रतिक्रिया जानने के लिए उत्कण्ठित होता हुआ धागे बढ़ता है, उसके साथ माय कथा भी अपने प्रबल वेग के साथ बढ़ती जाती है। अततो गत्वा रणमल्ल की विजय दुहुमि और मुंगलों के पनायन की दयनीय दगा के साथ रस परिपक्व होकर पाठक के अतचेतन को ध्यानदित कर देता है और वह पाठक ऐसी अनुभूति करता है मानो यह कथानक काव्यरूप में नहीं बल्कि साक्षात् रूप से देम रहा है। वीररस के प्रतिरिक्त किसी भी प्रकार के रस को निष्पन्न न होने देना, कवि की प्रतिरिक्त विनोपता है।

अलंकार

रणमल्ल छंद में शब्दालंकार एवं अर्थालंकार दोनों तरह के अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। जिनमें शब्दालंकारों का बाहुल्य है। ऐसा कोई भी छंद नहीं है जिसमें अलंकार का प्रयोग न हुआ हो, फिर भी कवि का अलंकारों को लाने के लिए दुराग्रह नहीं है। भाषा के प्रवाह में जितने भी अलंकार अनायास आगए वे आगए।
 छेकानुप्रास यह शब्दालंकार है। जहां अनेक वर्णों की अर्थात् व्यंजनों की एक बार स्वरूप और क्रम से आवृत्ति हो वहां छेकानुप्रास होता है। इस अलंकार का छंद में मफन प्रयोग हुआ है।

फू गराइ फू फू फार फारक, फौज फरि फुरमाणिया।

हुंकार कर कडि कर शर झडि, करवि करि कम्माणिया ॥ १६

वत्यनुप्रास यह भी शब्दालंकार है। जब अनेक व्यंजनों की स्वरूप मात्र से एक बार या अनेक बार समता हो या अनेक वर्णों की आवृत्ति स्वरूप और क्रम दोनों प्रकार से कई बार समता हो अथवा केवल एक वर्ण की अनेक बार आवृत्ति हो तो वत्यनुप्रास अलंकार होता है। यथा—

उदा० १ फुर फुरहि लम्प अलम्ब अम्बरि नेज निकर निरतर।

भर भरहि भेरि भयङ्क भूकर भरलि भूरि भयङ्कर।

दडदडी दडदड कारि दडवड देसि दिसि दिसि दडवडइ।

सचरइ शक सुरताण साहण साहसी सवि सङ्गरइ ॥ २१

२ दम दम कार दमाम दमकइ, डम डम डम डम डोल डमकइ।

तरवर पडरवेस पहट्टइ, तरतर तुरक पडइ तलहट्टइ ॥ ४७

३ गोरीदल गाहवि दिट्ट दहुट्टिमि गडि मडि गिरि गह्वरि गडिय।

हणहणि हकतउ हु हु ह्य ह्य हुकारवि ह्यमरि चडिय।

घडहडतउ घडि कमघज्ज घरातलि घसि घगडायण घूस घरइ।

ईडरवइ पडरवेस सरिसु रणि रामायण रणमल्ल करइ ॥ ५८

अत्यानुप्रास यह भी शब्दालंकार है। जब छंद के अंत में अनुप्रास होता है तब

अनुप्रास कहलाता है। इसके कई भेद होते हैं। रणमल्ल छन्द में सर्वान्त्य, समास तथा घोर समविषमास्य अनुप्रासों का प्रयोग हुआ है। उदाहरण सबत्र उपलब्ध है।

उपमा यह अर्थात्कार है। जहाँ परस्पर भेद रहते हुए उपमेय का उपमान के साथ सादृश्य का घणन हो, वहाँ उपमालकार हाता है। इसके पूर्णोपमा और सुप्तोपमा दो भेद होते हैं।

उदा० १ जब मडिसि मुक्क रणमल्ल सम, तत्र देखिसि लसकरि सरिमु जम।
—छ० ३३

२ तुक्खार तार तत्तार तेजी तरल तिवल्ल तुरङ्गमा। —छ० २५

३ जलहरि जिमि सिगणि गुण गज्जइ। —छ० ३६

रूपक यह भी अर्थात्कार है, जहाँ उपमेय को कह कर उसमें उपमान का अर्थ आरोपित कल्पित हो, वहाँ रूपक अलकार होता है।

उदा० १ सीचाणउ रा कमघज्ज निरगल, भडपइ चडवड घगड चिडा।
भडहड करि सत्तिरि सहस भडकई, कमघज भुज भडवाय झडा।
—छ० ६१

२ कमघज उदयगिरि मडण सविता। —छ० ५३

३ असि मारवि रुम्ब रणायरि, रगडिअ भजइ घगइ महाभडया।

—छ० ५६

४ तिभूआ खाडीया घडो दड किज्जि। —छ० ६८

५ मुक्क सिर कमल मेच्छ पय लगई। —छ० २६

६ पडक्कि वागि पक्कडत मारि मीर मक्कडा। —छ० ४५

अतिशयोक्ति यह भी अर्थात्कार है। जहाँ किसी वस्तु का बड़ा चढ़ा कर वर्णन किया जाय वहाँ 'अतिशयोक्ति' अलकार होता है।

उदा० हयखुरतल रेणइ रवि छाहिउ। —छ० ४६ इत्यादि
छन्द

रणमल्ल छन्द के सत्तर पद्यों में—१० आर्या, २७ चुप्पई ५ सारसां, ५ दूह ८ तिहविलोक्ति २ पंचामर ४ हात्की, ४ दुमिल ४ भुजगप्रयात और एक छण्य। इस प्रकार दश प्रकार के मात्रिक, वाणिक एवं मिश्र जातीय छन्दों का प्रयोग हुआ है।

आर्या यह अपभ्रंश वाङ्मय में सर्वाधिक व्यवहृत होने वाला छन्द है। इस छन्द के पूर्वाक्ष में सात गण [चतुष्पल] होते हैं। किंतु विषम स्थान पर कदापि जगण नहीं होता। पठ स्थान में जगण अथवा नगण एक सधु का विकल्प

होता है। यदि पष्ठ स्थान में चतुलघु रूप गण हो तो उम गण के द्वितीय लघु रूप से प्रथम गण के भ्रत में यति होती है, पर तु पष्ठगण से परे सप्तम गण चतुलघुरूप हो तो उसके प्रथम लघु के पूर्व विराम दिया जाता है। द्वितीय भ्रद का ऐसा लक्षण है कि यदि पचम गण चतुलघु रूप हो तो पचम गण के पूर्व यति करनी चाहिए। किंच भार्या के उत्तराद्ध म नियम से पष्ठगण एक लघु एक मात्रा रूप ही होता है, चतुर्मात्रिक नहीं। इतना ही पूर्वाद्ध से उत्तराद्ध की विशेषता समझें।^१

भार्या छंद की ही प्राकृत पैगलम् में गाथा कहा गया है जिसके लक्षण भी उपयुक्त भार्या के लक्षणों व समान ही हैं।^२

हिन्दी भाषा के कवियों ने इस छंद का प्रयोग प्रायः कम ही किया है फिर भी सबषा भ्रनप्रयुक्त नहीं है। उदाहरणार्थ रामचरित उपाध्याय की यह भार्या ली जा सकती है।

१ १२ १३ १४ १५ १६ ज १ ७ ग
कवि निधन भी होकर शठ की सेवा कभी न करता है।

१ १२ १३ १४ १५ १६ ग
रस्ताकर में जाकर, हंस कभी क्या विचरता है ॥

चुप्पद यह तयिक जाति का सम मात्रावत्त है। इसके प्रत्येक चरण में पाँच मात्राएँ होती हैं। अतः म एक गुरु तथा एक लघु होता है।

विशेष—प्रस्तुत का य में प्रयुक्त चुप्पद चरणाकुलक की तरह प्रयुक्त हुई है।
प्राचीन कवि १६ मात्रा के छंद की भी चुप्पई कहते थे।

१ लक्ष्म तत्सप्त गणा गोपेता भवति नेह विषमे ज ।

पठोऽय न लघूवा प्रथमेऽय नियतमार्याया ॥

पष्ठे द्वितीयलात्परके ले मुखलाच्चसप्तमि पद नियम ।

चरमेऽय पचमके तस्मादिह भवति पठोल ॥

—वत्तरस्ताकर २ भ० प्लो० १२

२ पहम बारह मत्ता वीए अट्टारहेहि सजुत्ता ।

जह पढम तह तीअ दह पच विहूसिया गाहा ॥

सप्तगणा दोहता जो ण लह छट्ट रोह जो विसमे ।

तह गाहे वि भ भद्वे छट्ट लहुअ विमारोह ॥

प्राकृत पैगलम्, १ ५४ ५६

सारसी यह मातृविक जाति का सममानावत है । इसके प्रत्येक चरण में समाप्त मात्रा होती है । अतः अक्षर गुरु तथा एक लघु होता है तथा गोवह म्कार पर घटि होती है । इस वर्ण का अक्षर नाम 'बीर' भी है ।

द्वि यह अक्षर गण मातृविक वर्ण है । अक्षर का नाम भी गौर समान ज्ञान तर के कवियों ने इस वर्ण का साक्षात्क व्युत्पत्ति किया है । इसके प्रथम चरण में तेरह मात्रा द्वितीय चरण में अक्षर मात्रा फिर तीसरे और चौथे चरण में अक्षर तेरह और अक्षर मात्रा होती है ।^१ इसके विषय चरणों के घटि म जगण नहीं होता चाहिए ।

सिंहविसोक्ति यह सत्कारी जाति का सममानावत है । इसके प्रत्येक चरण में विप्रगण (चतुष्कल सप्तसु) तथा गण धर कर (१६ मात्राएँ पूरी करते हैं) इस वर्ण का अक्षर भी चरण म जगण, भगण या कर (द्वि गुरु चतुष्कल) नहीं रहने चाहिए ।^२

पञ्चचामर यह अक्षर जाति का सममानावत वर्ण है । इसके प्रत्येक चरण म क्रमशः जगण रगण पुन जगण, रगण व उपरान्त एक जगण और गुरु होता है ।^३

हाडकी यह महाभोगिक जाति का सममानावत है । इसके प्रत्येक चरण म २६ मात्राएँ होती हैं । अतः म एक गुरु और एक लघु रहता है । दस आठ और अक्षर पर घटि होने पर इसे 'मरहटा' कहा जाता है ।

धुमिल यह साक्षात्क जाति का सममानावत है । इसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं । अतः में चरण (द्विगुरु चतुष्कल) होता है । दस, आठ और चौदह पर घटि होती है । पद में विषय स्थान पर चरण (गुण्डय) तथा बीच में विप्र (सप्तसु चतुष्कल) तथा घटि (सामा म चतुष्कल)

१ तेरह मत्ता पञ्च पम, पुण एभारह देह ।
पुण तर एभारह देहा लक्षण एह ॥

—प्राकृत पंगलम्, १ ७८

२ गण विष्प सगण धरि पअह पम,
भगण सिंहमन्नीभण छद धर ।
गुण्णिगण मण बुजभहु साम भणा
एहि जगण ण भगण ए कण्ण गणा ।

—प्राकृत पंगलम्, १ ८३

३ जरो जरो जशाविद वदति पञ्चचामरम् ।

—वृत्तरत्नाकर, ३ ८६

दिया जाता है ।^१

भुजगप्रयात यह जगती जाति का समवाणिक छंद है । इसके प्रत्येक चरण में चार यगण होते हैं ।^२

छप्पय इस छंद के आदि में रोला के चार पाद और अंत में उल्लाल के पूव दल तथा उत्तर दल होते हैं ।^३ प्रस्तुत छप्पय में २८ मात्रार्थों का उल्लाला प्रयुक्त हुआ है ।

विशेष प्रस्तुत काव्य के छन्दों में कुछ स्थानों पर नियम सम्बन्धी गिथिनता भी दृष्टि-गोचर होती है ।

वरुण-शैली

रणमल्ल छन्द एक वीर रसात्मक चरित काव्य है । रणमल्ल क मरुदम्भ पौरुष का वरुण ही कवि को अभीष्ट है । फलतः वह इस काव्य में वरुणात्मक शैली अपना कर चला है, जिसमें रसानुकूल श्रोज तथा अविरल वेग गुण सहज ही आगए हैं । कवि का माया पर पूरा अधिकार है । वह कवि के हृदयगत भावों का अनुसरण करती हुई सी प्रतीत होती है । काव्य कलात्मक होने के कारण कवि ने अपने नायक क चरित्र-बल की रक्षाय उसके प्रतिद्वंद्वी के बल चित्रण में भी कोताई नहीं बरती है । यद्यपि कवि ने इस काव्य को वरुणात्मक शैली में प्रस्तुत किया है पर तु पत्र प्रसंग एव परिसंवादों के प्रयोग ने इस शैली में अद्वितीय छटा उत्पन्न कर दी है । इस अल्पकाव्य काव्य में दो पत्र एव आठ परिमवाद आए हैं । यथा—

पत्र—छंद ११ से १५ तथा १७

१ तीस दुइ मत्तह एरि सजुत्तह वृहमण राय भणुति णरा ।
विमम त्तिअ ठामहि एरिस भाअहि पअ पअ दीसइ कण्ण घरा
ता दह पढम ठटावे अट्ट अ तीअ चउद्दह किअ णिलमो,
जो एरिस छन्दे तिहुअणवदे सो जण बुज्जउ दुम्मिल सो ॥
दह वसु चउद्दह विरइ वरु, विसम कण्ण गण देहु ।
अत्तर विण्ण पइक्क गण सुम्मिल छन्दे कहेहु ॥

—प्राकृत पगलम् १ १६६ १६७

२ भुजङ्ग प्रयात भवेद्य इच्छतुभि ।

—वत्तरत्नाकर, अ० ३ बलो ५५

३ रोला के पद चार, मत्त चौबोस धारिए ।

उल्लाला पद दोय, अत माहीं सुधारिए ॥

—श्री परमश्वरानन्द छन्द गिज्ञा पृ ७०

परिसायाद—

- १ सात ग्यार स्याद । छ० २६
- २ दूा रणमल्ल । छ० २८
- ३ रणमल्ल दूा , । छ० २६ ३५
- ४ यनिव दूा , । छ० ३६
- ५ प्रजा रणमल्ल । छ० ३८ ४१
- ६ योगिनियों द्वारा प्रसा गिशा । छ० ४३
- ७ साह मिस बागानु स्याद । छ० ६३ ६६
- ८ रणमल्ल का स्थापन । छ० ७०

अनुरणनात्मक शब्द प्रयोग

रणमल्ल छ० की छ य काव्यगत विधेयताओं के साथ साथ उनके अनुरणनात्मक शब्द प्रयोग भी एक विधेयता है। छ य मात्रक शब्दानुरणन से यगन चित्रोपम साकार बन जाता है। अर्थात् य वालान छ य काव्य कृतियों में भी इस प्रकार के प्रयोग दृष्टि गोचर होते हैं, पर तु उनमें रणमल्ल छ० जगा ना सौंय एक प्रवाह नहीं मिलता। कवि ने विभिन्न वीरा की हारों के प्रतिरिक्त युद्ध वाघों एवं शम्भ्रास्त्र प्रवाह की सूदम स सूदम ध्वनिमा का उल्लस विधा है जो कवि की सूदमावलोकन दृष्टि का परिचायक है।

युद्ध वाघों के शब्द

[अ] डोल गहरि डोल डमकत । —छ० २२

डम डम डम डम कर ७ कर डोल डानी जगिया । —छ० २३

डम डम डम डम डोल डमकई । — ६७

१ [अ] तडि तडयडइ पडइ घण गजजइ ।

जाणइ राम हो सरण पवजइ । —म० पु०

[आ] तोइ तडति तण बघणइ मोडइ कडति हडइ घणइ ।

काडइ चडति चम्मइ चलइ घट्टइ घडनि सोणिय जलइ ॥

—जम० च० २ ३७ ३४

[इ] भिरिभिरि भिरिभिरि भिरिभिरि ए महा वरसाति ।

—सिरि झुलि भइ फाग

[ई] छुर छुर छुदि छुदि महि घघर रव कलइ

ण ण खण गिणि करि तुरम चले ।

—प्राकृत पगलम

[घ्रा] भेरि भर भरहि भेरि भयव भू कर भरसि भूरि भयकर । — छ० २१
 [ङ] दमामा दम दम करि दमाम दमकरई । छ० ४७
 [ई] धौसा घसमस घु स करइ मफरइह । — छ० ४९
 [उ] दडवडी दड दडी दड दड कारि दडवड देसि दिसि दिसि दडवडई । छ० १
 [ऊ] काहल कलकलहि काहल कौडि कलरवि कुमल कायर घर घरई । — छ० २३
 वीर हक्क

[अ] विवहर बुम्बल बुम्बल वक्कइ । छ १३
 [आ] हसि हसियार हुया हल हल करि । छ १८
 [इ] हुकार कर कडि करइ सर भडी करवि करि कम्माणिया । छ १९
 [ई] फुक्कारि मीर मल्लिक मुफरद मू छ मरडी मच्छरइ ।
 [उ] बुल्लइ हठि हेजब हक्कारिम । छ २९
 [ऊ] हल हल विगरी विगरी बोलतिम मीर लहरि छिलत । छ० ५०
 [ए] हण हणि मृणसिम भणइ असभम । छ० ५६

मुगल सैय

मद भीमळ सेरवचा बगाळी मू गळ महामलिकक ।
 ईंटर अडर सिक्वरि रणयम्भरि तळि तरवरइ तुरक्क ।
 हक्कारवि विकट बहुकटि चल्लइ बुल्लइ विरव बहुम ।
 सुरताण सरिस सिलार सिपाही सवि मिळि समरि पुहुत्त ॥ छ ५०

रणमल्ल प्रयाण

गोरीदळ गाहवि दिट्ट दूदिसि गडि मडि गिरि गह्वरि गडिय ।
 हण हणि हक्कतउ हु हु हय हय हुकारवि हयमरि चडिय ।
 घडहड तउ घडि कमघज्ज घरातलि घगढायण धूम घरइ ।
 ईंटरवइ पडरवेस सरिसु रणि रामायण रणमल्ल करइ ॥ छ ५८

युद्ध वणन

उल्लालवि भालवि जज्ज कपालह लय वधि लोपि लडत ।
 धारक्कटि धारि घगड घर घसमसि घसममि धुइ पडत ।
 कमघज्ज उदयगिरि मडण सविना भलमल मल्ल मिडन ।
 धुरि घसि घसि धूम घरइ घगढायणि घरवरि रण्ड हलत ॥ छ ५३

यवन सय पलायन

जि बुम्बास बुम्बा उतक्क सतक्क जि क्विक बहुक्क लहक्क चमक्क ।
 जि चङ्गी सुरङ्गी तरङ्गि चठ ता रणमल्ल णिट्टेण दीण दडता ॥
 जि मुहा समुहा सगा इइ सदा जि बुम्बास चुम्बाल वगाल बदा ।

रणमल्ल धेद

जि जुग्भार तुक्कार न माल मुक्ति, रणमल्ल तिष्ठि न ते ठाम चुक्ति ॥
 जि हक्का मलिक्का बलक्का कगाड़ी, जि जुद्धा मुहुद्धा सनद्धा भजाड़ी ।
 तिमूष्मा सांठीया घटी दड किज्जि रणमल्ल तिष्ठि मु हि घाम तिज्जि ॥
 जि बक्का घरक्का सरक्का बहता जि सांवा सग वा भरब्बा सहता ।
 जि जुग्भार छज्जार हज्जार चलि रणमल्ल तिष्ठि मुहि घाम चलि ॥
 छ ६६ ६७, ६८, ६९

उपसंहार

रणमल्ल छ" सराजानीन ऐतिहासिक तथ्यों पर सम्बन्ध प्रकाश डालता है । यह मस्लिम इतिहासकारों द्वारा लज्जावश अथवा अन्य विन्ही कारणों से छुपाई हुई महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का पूरा परिचय देता है । इनके द्वारा साहित्य की छ" सज्ज विधा अधिक बलवती हुई है । भाषावैज्ञानिक दृष्टि से यह अपभ्रंश तथा प्राधुनिक आय भाषा (राजस्थानी गुजराती) श्रुतना को जोड़ने वाला एक महत्त्वपूर्ण बलय है । साहित्य जगत इस कृति के एक सटीक सस्करण की बहुत समय से आवश्यकता अनुभूत कर रहा था, जिसे भा वि म घोष प्रतिष्ठान, बीकानेर द्वारा मूतरूप दिया गया है ।

इस कृति की धन्य प्रति नहीं मिलने के कारण गुजरात वर्नामुलर सोसाइटी द्वारा प्रकाशित रा ब वा नेशवलाल ह ध्रुव के पाठ को आधारस्वरूप मानने के लिए विवश होना पडा है फिर भी पाठानों के अवय परम्परानुमोदित शैली सत्याप तथा भावाय के द्वारा पाठकों को रचयिता के भावों तक पहुंचाने का प्रयत्न किया है । छद के मूल पाठ को टिप्पण म दे दिया गया है । इस प्रयत्न को सफल बनाने में मुनि जिनविजय जी एव श्री हरिबल्लभ चू भायाणी के प्रोत्साहन, सस्था के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण पारीक के निर्देशन आचार्य श्री नरोत्तमदास स्वामी के सुभावो तथा श्री प्रगरचंद नाहुटा, श्री सीभाभ्यसिंह शेखावत एव श्री सूर्यशंकर पारीक के सहयोग का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । मैं इन सभी महानुभावो का हृदय से आभार स्वीकार करता हू ।

— मूलचन्द 'माणश

रणमल्ल छद

मूल पाठ
पाठ भेद
और भावार्थ

आर्या

शकर गुरु-गणनाथान्,
नत्वा वर-वीर-द्रुद आरम्भे ।

कवयेऽहं रणमल्ल,
प्रतिमल्ल यवन-भूपस्य ॥ १ ॥

यै (कवि श्रीधर) श्रेष्ठ वीरचरित्र के प्रारम्भ में भगवान् शिव, गुरु (एव) षण्णपति को नमस्कार करके यवन - राजा क प्रतिद्वंद्वी रणमल्ल का (चरित्र) वर्णन करता है ॥ १ ॥

द्वन्नाधिप मद-हर्ता,
कर्ता कदास्य समर-वर्तुणाम् ।

वीर जयश्री धर्ता,
रणमल्लो जयति भू-मर्ता ॥ २ ॥

युद्ध करने वालों का नाश करने वाले छत्रपतिपों के रूप को हरने वाले, वीरों की विजय श्री को धारण करने वाले पृथ्वी के पति रणमल्ल की जय हो ॥ २ ॥

यम-मदन प्रतिनीता,
सीता रमणेन दानवा स्फीता ।

अधुना कमधज मल्लो,
रणमल्लम् तत्र तान् नयति ॥ ३ ॥

सीता के पति रामचंद्र ने विस्तार पाये हुए राज्यों का यमलोक पहुँचाया था । पर उन (रागम स्वरूप यवनों) को राठौट वीर रणमल्ल बहा (यमलोक में) पहुँचाता है ॥ ३ ॥

पाठ भेद -

१ शीपक रसवृत्त छंद है । नाय, युवन ।

२ कदन सबल कर्तानाम् ।

३ सीता, दानवास्फीता ।

हम्मीरेण त्वरित,
 चरित गुरताण फोज सहरणम् ।
 कुरत इदानीमेको,
 वरवीरस त्वेव रणमल्ल ॥ ४ ॥

(जिस प्रकार) हमीर न क्षीघ्रनापुत्रक मुलतान की सेना का सहार दिया
 (उसी प्रकार) इस समय एक मात्र वीर रणमल्ल ही करता है ॥ ४ ॥

दिल्लीपति परिभूतो
 तद् ददृशे दृश्यते च बाहुवलम् ।
 शकशत्ये रणमल्ले,
 यमस्तुत्ये तिमिरलिङ्गे यत् ॥ ५ ॥

दिल्लीपति के पराभव म यम के समान तैमूरशाह म जा पराक्रम देखा गया
 था वही (पराक्रम) यवनो के लिए कटक रूप रणमल्ल म देखा जाता है ॥ ५ ॥

कति कारयति भूपा,
 भूवि यूपान् केऽपि वापिका कूपान् ।
 एको ननु पुनरास्ते,
 रणमल्लो घोरि कारयिता ॥ ६ ॥

कितने ही राजा पृथ्वी पर यमस्नभ बनवाते हैं और कितने ही (राजा)
 बावडिया और कूप बनवाते हैं किन्तु (यवनों के लिए) घोर बनवाने वाला एक
 रणमल्ल ही है ॥ ६ ॥

यदि न भवति रणमल्ल
 प्रतिमल्ल पादशाह कटकानाम् ।
 विक्रीयते घगडैर,
 बाजारे गुजरा - भूपा ॥ ७ ॥

यदि बादशाह की सेनाओं का प्रतिद्वंद्वी रणमल्ल न होता (तो) यवन गुजरात
 के राजाओं को बाजार मे बेचते ॥ ७ ॥

सुभट शतरति विकट,
 पट्ट करटिघटाभिस्त्कट कटकम् ।

४ हमीरेण, सहरणे, कुरते तदिदानी वर धीर स्त्ववेक एव ।

५ परिहरणे तदपे, सत्ते, लिङ्गे च ।

६ कूपा

७ X ।

तानटयति रणमल्लो,

रणभुवि का वैरिणा गणना ॥ ८ ॥

जो सेना, सैन्धो योद्धाओं के कारण विक्ट भोर (युद्ध में) दक्ष हाथियों के समूह से डमत्त है उसको भी रणमल्ल युद्धभूमि में घायल कर देता है। उसके लिए, युद्ध-भूमि में सामान्य शत्रुओं की क्या गिनती है ? ॥ ८ ॥

भ्रनररत भरत-रस,

सरसै सह रत-रस सम स्त्रीभि ।

वीर-रस सह वीरैर्

विलासयत्येष रणमल्ल ॥ ९ ॥

यह रणमल्ल रमिकों के साथ नव रसों को, स्त्रियों के साथ सुरत रस को तथा वीरों के साथ वीर रस को आमोद प्रमोद करवाता है ॥ ९ ॥

खल-कमला गुरु-हरण,

पर-वरण समर डम्बरारम्भे ।

शिव शिव रणमल्लोऽय,

शकदल मद-मदनो जयति ॥ १० ॥

युद्ध के आरम्भ में अपने श्रेष्ठ वीरों का निर्वाचन करने वाले, शत्रुओं की राज्यश्री का महान हरण करने वाले तथा शक - समूह को नष्ट करने वाले इस रणमल्ल की जय हो ॥ १० ॥

॥ चुप्पड ॥

सतिरि सहस साहणवड साहण,

गई अरदास पासि सुरताणह ।

कणगरु कोप लीघ हरि हिद्द,

तु रणमल्ल इवक नह वडू ॥११॥

सतरह सहस्र सेनाधिपति क शासन से सुलतान के पास प्रायना की गई कि—
हिद्द (राजा) रणमल्ल ने घाय का बहुत बडा (राजकीय) कोप सूट लिया है और वह अकेला (रणमल्ल) ही तुम्हारी सेवा करना शकीकार नहीं करता है ॥ ११ ॥

८ मुभतटेरति, पटुश ।

९ सुरतरस समरस सम, विससन् स एक् एव ।

१०-११ इन दोनों के बीच में यही श्लोक नर वीर पाठांतर से ११ की सट्या देकर पुन लिखा है ।

११ शीर्षक चुप्पड नहीं दिया गया है । साहणाव कणगरु किद्ध सिद्ध सह हिद्द, तू ।

पुण फुरमाण भाण सुरताणइ (णी),
नहि रणमल्ल गणइ रणताणइ (णी) ।
जिम हम्मीर वीर सिम्भरवइ,

तिम कमघज्ज मू छ मुहि मुरवइ ॥ १२ ॥
मुलतान के पास पुन फरमान भाषा कि—रणमल्ल युद्ध मय की परवाह नहीं
करता है तथा जिस प्रकार सांभरपति (चौहान) हम्मीर (मूर्छों पर ताव दिया
करता था उसी प्रकार) (यह) कमघज्ज वीर (रणमल्ल) मूर्छों मरोडता है ॥ १२ ॥
चचलि चडा चिहू दिसि चपइ,

थर थर थाणदार उर कपइ ।

विवहर बु बभ बु बह वक्कइ ॥ १२ ॥

(जब यह रणमल्ल) घोड़े पर सवार होकर चारों दिशाओं को दबाता है
(तब) थानेदारों का हृदय थर थर कांपने लगता है और (यह) कमघज्ज वीर हाथ में
तलवार लेकर झपटता है (तो) यवन बु बभ बु बभ (तोबा-तोबा) करने
लगते हैं ॥ १३ ॥

निसि खभाइच नयर उध्रकइ,

धू घळि धू स पडइ धूलक्कइ ।

प्रह पुक्कार पडइ (पडइ) पट्टण तळि,

रे रणमल्ल घाडि जव समळि ॥ १४ ॥

(यह) रणमल्ल सायनाल में समाइच नगर में (प्रविष्ट होकर) हलचल
उत्पन्न कर देता है, घु घले समय में धूलका नामक नगर में (इसका) नगारे पर डफा
पडता है और प्रात काल के समय जब रणमल्ल डाकू के (आने का समाचार) सुनाई देता
है (तब) पाटण की तलहटी में पुवार मच जाती है ॥ १४ ॥

मुहुडा(सि)या मीर रहमाणी,

दाम हराम करइ सुरताणी ।

माल हलाल खान खिजमत्ती,

तु रणमल्ल डक्क नह खिती ॥ १५ ॥

१२ पण, गणइ, हिम्मीर, समरविइ, कमघज्ज मुछ मरवै ।

१३ चडि चाउ दिसि चपि, थिर थिर, अरि, कपइ, लहविकइ, विवहरि
बू ब-बू ब वहविकइ ।

१४ खमनयर उध्रकिइ धू घलि धु स पडीइ धुलक्कइ, पोकार पडिइ तव ।

१५ मुहुडासिया मीर रजाणी, करिइ, खजमत्ती तू, ए नह ।

(इस रणमल्ल ने) अनेक यवन वीरों को पराजित कर दिया है और मुलतान के धन को नष्ट कर रहा है । (यह) खान के भाल जायदाद को अपनी संपत्ति समझ रहा है तथा वह एक ही इस पृथ्वी पर तुम्हारी सेवा स्वीकार नहीं कर रहा है ॥ १५ ॥

इक रणमल्ल राय सुणि आलमि,
रहिउ हुई हैराण खू दाळम ।

हेला लाखबद बुलावि,
लखि फुरमाण खान चल्लावि ॥ १६ ॥

समग्र जगत में एकमात्र राजा रणमल्ल को (स्वतंत्र) सुन कर बादशाह आश्चर्यचकित हो गया । उसी तत्काल कासिद को बुलावाया और उसे (अपना) फरमान देकर खान के पास भेजा ॥ १६ ॥

हय गय कटक थाट उल्लट्टिय,
दहु दिसि पडरवेस पलट्टिय ।

निहुटी वाटि काळ गढ घल्लि,
करुपराण रंयत रणमल्लि ॥ १७ ॥

(फरमान में उल्लेख था कि) रणमल्ल की रंयत पर दशों दिशाओं में यवन स य भस्वदल एव हस्तीदल भेज कर आक्रमण करो और गढ का गुप्त मार्ग खोज कर उसे नष्ट कर दो ॥ १७ ॥

ईडर भणी भीच सुरताणी,
फू फू कार फिरई रहमानी ।

मू गल मेच्छ मुहइ मच्छर भरि,
हसि हसियार हुया हल-हल करि ॥ १८ ॥

(इस प्रकार का आदेशपत्र प्राप्त करके) मुलतान के यवन वीर फुफकारते हुए ईडर को लक्ष्य बनाकर (इधर उधर) धूमने लगे और कई मुगल जातीय यवन मात्स्यभाव युक्त मुहसे हसते हुए सावधान हुए तथा चलो चलो करने लगे ॥ १८ ॥

॥ सारसी ॥

फूगराई फूफूकार फारक फौज फिरि फुरमाणिया ।
हुकार कर कठी करइ सर झडि करवि करि कम्माणिया ।

१६ आलम हैहराण रहिउ खू दाळम, हेला, बोलावीय, चल्लाविय ।

१७ दहु, नहुटि, घल्लिउ, रंयति करु पराण रणमल्लह ।

१८ सुरताणी य, फिरिय, रहमानी य, मु गल मु ह मिछ मछर, हुसीयार होया ।

फुफकारि मीर मलिक मुफरद भू छ मरडो मच्छरद ।

सचरइ सक सुरताण साहण माहसी मवि सगरइ ॥ १९ ॥

यवन सैन्य मे यवनाधिपति की फराहती हुई बहुत मो ध्वजाए घोर फुफकारती हुई आजाए प्रसारित हुई । (जिनको सुनकर गवाबीर) डरकर बगते हुए, हाथों में धनुष धारण करके धर वर्षा करने लगे । (बुद्ध) यवन सरदार मूर्खों पर ताव देने हुए अकेले ही मत्सरित होते गये । (इस प्रकार) सुनतान की चतुर्विध चञ्चल सैन्य युद्धाय चली ॥ १९ ॥

॥ इह ॥

साहस वसि सुरताण दळ, ममुहरि जिम चमकत ।

तिम रणमल्लह रोम वसि मू छ सिहरि फुरकत ॥ २० ॥

वीरता करने वाली सुलतान की सैन्य का अप्रमाण ज्योही प्रत्यक्ष हुआ, वही रणमल्ल की मूर्खों के गिबर रोप के कारण फरकने लगे ॥ २० ॥

॥ सारसी ॥

फुरफुरहि लव अलब अचरि नेज निकर निगर ।

भरभरहि भेरि भयक भू कर भगळि भूरि भयकर ।

दडदडी दडदड कारि दडवड देसि दिसि दिसि दडवडइ ।

सचरइ सक सुरताण साहण साहसी सवि सगरइ ॥ २१ ॥

(जब) शक सुनतान की चतुर्विध चञ्चल सैन्य युद्धाय चली (तब समय) आकाश के अंदर छोटी बड़ी पताकाओं का समूह लगातार फहर रहा था । भेरी की भर भर करती हुई मयकर ध्वनि और दुडबडी की दड दड करती हुई ध्वनि देश की दसा दिशाओं में ही रही थी ॥ २१ ॥

॥ इह ॥

साहस वसि सुलतान दळ ममुहरि जिम दमकत ।

तिम तिम ईडर मिहर वरि, डाल गहिर डमकत ॥ २२ ॥

१९ छंद इतना ही शीपक है, नाम नहीं दिया गया है । फुगराय फुर-
फुर, करि फुरमाणीया, बाण कर जडि, कमाणया, फुकारि, मलिक
मुरडोय, मच्छरे, सचरिय, साहणसेन, गिव शिव मगर ।

२० शीपक आर्या दिया हुआ है । समहरि जेम, तिम रणमल्ल मु छ ।

२१ छंद का नाम नहीं दिया गया है । निरतरा, भरभरहि, भयकरा
दडवडाप दडवडकारि देस दडडिय दह दिसे, मचरिय, सेन शिव
गिव सगर ।

शीघ्रता करने वाली सुलतान की सैन्य का अग्रभाग ज्यों ज्यों स्पष्ट होता जा
 षा, त्यों त्यों ईडर के गिन्वर पर गभीर ध्वनि से ढोल बज रहे थे ॥ २२ ॥

॥ सारसी ॥

ढम ढमइ ढम ढम कर ढूँ कर ढोल ढोली जगिया ।
 सुर करहि रण सरणाइ समुहरि सरम रसि समरगिया ।
 कलकलिहि काहल कोडि कलरवि कुमल कायर थरथरइ ।
 सचरइ सक सुरताण साहण साहसी सवि सगरइ ॥२३॥

(जब) शक सुलतान की चतुर्विध चंचल सय युद्धाय चली, (तब उसके
 र) ढोली जगी ढोलों को ढमाढम-ढमाढम बजा रहे थे । सहनाइया युद्ध के स्वर
 बज रही थीं । (उसके) अग्रभाग में स्थित युद्धरस सित्त वीर प्रसन्न हो रहे थे
 वीर) काहल की क्वक्ष ध्वनि तथा प्रत्यघाम्रा की टकारों से कोमल (हृदय) कायर
 रहे थे ॥ २३ ॥

॥ दूह ॥

जिम जिम लसकर उधमइ, करी नि बु बु कार ।
 तिम तिम रणमल्ल रोस भरि, तोलइ तरल तुखार ॥ २४ ॥

ज्यों ज्यों (सुलतान की) सेना नबी नबी शब्दोच्चारण करते हुए (ईडर की
 र) अग्रमर हो रही थी, त्यों त्यों सरोप रणमल्ल अपने घाड़े की जांच कर
 षा ॥ २४ ॥

॥ सारसी ॥

तुखार तार ततार तेजी तरल तिवख तुरगमा ।
 पवखरिय पवखर पवन पखी पसरि पसरि निरुप्पमा ।

२२ शीपक आर्या दिया गया है । समहरि, चमकति, सिहरसलि,
 गुहिरढमकति ।

२३ शीपक में छंद का नाम नहीं दिया गया है । ढमढमोयकार, ढोली
 जङ्ग्या, करहि समहरि ससर सर सरणाइया, कलकलिहि कलि-
 रव कमल कायर घूजए, सेन शिव शिव मंगरे ।

२४ उधमसइ करि, रणमल्ल, तोलिइ ।

भसवार आसुर भंग भसलीइ असणिम भसुहउ(ड) ईडग्इ ।

सचरइ सा सुरताण साहण साहसी सनि सगरइ ॥ २५ ॥

(जब) एक गुप्तता की चतुर्विध चचन सैय मुदाय चली, (तब उममें) सार देग क सुगार ओर ससार देग क तेजी तामक चचन तथा तीक्षण, स्वर्गों से सुसज्जित एक पवन के समान वेग बाल घोड़ थे । वे पदार्थों क समान चल रहे थे । (उन पर) ईडर क लिए अगुभकारी व्यत्ययरूप पवन सवार थे ॥ २५ ॥

॥ चुप्पइ ॥

हल ऐयार हकारवि बुल्लइ,

भुजबळि सयळ मुट्टिदळ घल्लइ ।

गयु खान चुन् नगतळि चल्लिय

सकदळ दुहु दिमि दिद्ध डहल्लिम ॥ २६ ॥

खान स्वय पहार की तलट्टी म गया । पवन सय न (ईडर के) दोनों ओर घेरा डाल दिया । (तदुपरांत) खान ने पवन एम्पारों को सम्बोधित करते हुए कहा—(बीरो !) मुट्टी भर (ईडर की) सय को अपने भुजबल से नष्ट कर दो ॥ २६ ॥

मलिक मत्र मज्झिम निसि किद्धउ,

तव हेजव फुरमाण स दिद्धउ ।

ईडरगडि अस्सइ चडि (डि) चल्लिउ,

जइ रणमल्ल पासि इम बुल्लिउ ॥ २७ ॥

(तत्पश्चात् खान ने) मलिक से मध्यरात्रि म मात्रणा की । (उसी के अनुसार) पत्रवाहक को आज्ञापत्र लिल कर दिया । (वह पत्रवाहक) अश्वारूढ होकर ईडरगढ़ की ओर चला और रणमल्ल के पास जाकर इस प्रकार कहने लगा ॥ २७ ॥

सिरि फुरमाण घग्गि सुरताणी,

हय गय (धर दय) हाल माल दीवाणी ।

२५ शीपक पर छद का नाम नहीं दिया गया है । तोखार, तेजी य, तिख पष्परीय पष्पर पखि पसरीय पवन, भस लीय, ईडरे, सेन शिव शिव सगरे ।

२६ शीपक पर चुप्पई नहीं दिया गया है । बुल्लिइ, मु ठि, पदगतलि चल्लिय दहु दिमि, डहल्लीय ।

२७ अब ही चडि चल्लु, जई, बुल्लउ ।

अगर गरास दास सवि छोडिअ,

करि चाकरी खान कर जोडिअ ॥ २८ ॥

(हे रणमल्ल ! तुम) सुलतानी आज्ञा को शिरोघाय करते हुए वतमान-
नालिक शासन, हाथी, घोडे, ग्राम, सेवक आदि सभी कुछ छोड कर (मात्र एक)
ज्ञान की सेवा चाकरी करबद्ध होकर करो ॥ २८ ॥

रा असि सरिसु बाहु उठ भारिअ,

बुल्लड हठि हेजब हक्कारिअ ।

मुझ सिर कमल मेच्छ पय लग्गइ,

तु गयणग(म)णि भाण न उग्गइ ॥ २९ ॥

राजा (रणमल्ल) को असि सहित विशाल भुजा आवेश के कारण तन
गई । (उसने) दूत को सम्बोधित करते हुए कहा— (यदि) मेरा मस्तक रूपी
कमल (उस) यवन के पैरों पर पड़ेगा तो गगनागण में सूय उदित नहीं होगा ॥ २९ ॥

॥ सिंहचिलोक्ति ॥

जा अवर पुड तळि तरणि रमइ,

ता कमघज वघ न घगड नमइ ।

वरि वडवानळ तण भाळ समइ,

पुण मेच्छ न आपू चास किमइ ॥ ३० ॥

जब तक गगनागण में सूय क्रीडा करता रहेगा, तब तक (इस रणमल्ल)
राठौर के स्क्व (उस) यवन के समक्ष नहीं भुकेंगे । भले ही बडवानल की लपटों
का क्षमन हो जाय पर (मैं) किसी भी प्रकार से यवनों को पृथ्वी प्रदान नहीं करूंगा ॥ ३० ॥

पुणु (पुण) रणरस जाण जरइ जडी,

गुण सीगणी खची खती चडो ।

छत्तीस कुलह वल करिसि(सु) घणु ,

पय मग्गिसि रा हम्मीर तणु ॥ ३१ ॥

(मैं) कहता हू कि— (यदि) युद्धोत्त होकर (क्षत्रिय वीरा ने) कवच

२८ सुरताणी य, दय दय, दीवाणी य, सब छोडिय, किरि जोडि य ।

२९ रा नहीं है । असिवर, उम्मारोय, बोलिई, हेजब-हक्कारीय, सिरि,
लगिइ उग्गइ ।

३० शीपक पर छद का नाम नहीं दिया गया है । तरणी तपिइ, नमिइ,
वडवानल भाल शमिइ, तु मेछ किमिइ ।

३१ सीगणि पचिम, छत्तीस, तणू माग्गिसि रा हम्मीर पणू ।

धारण कर लिए और (उनके) हा गणी
 क (शत्रिय) अत्यधिक शक्ति लगा देगे
 शीर प्रगत करेगे । अर्थात् जिस प्रकार
 ५ उसी प्रकार

विजयी
 दिया था । अब (६
 (उसके) सतरह
 मि

७

मैने युद्ध में
 युद्ध में (पराङ्मुख होकर)
 होगा, तब उसकी सेना (मुझे)
 देखकर भय-भीत हो जाएगे ॥३३॥
 मम मोहिय ॥

हुँ "

जय उठिसि हठि हवक
 तब न गणू

मैने युद्ध-तरफ घनेक मलिकों को
 यवनों को तिनर बिनर करन वाला (ही) हूँ ।
 (यह तो एक ही गुनगान है) मैं तीन-तीन
 समझूँगा ॥३४॥

३२ दफरलान जवे भाग्यु धगिग माग्य

३३ सम्मगनीन, पडि भाग्यु मडो, ॥

३४ (माहिस), मघ रण, ॥ १॥

बळ वुल्लिम वल्लि मलिकक कहि,

मम वरणिसि मुण (१)सिम दुत मुहि ।

जब अपिसि ईडर सहरि तळ,

तव पेखिसि मुह रणमल्ल वळ ॥३५॥

(रणमल्ल ने) पुन इस प्रकार कहा—(हे दूत ! तुम) अपने सरक्षक मलिक से मेरा वचन उचित प्रकार से वरान कर देना । (साथ साथ यह भी कह देना कि) जब तुम ईडर की तलहट्टी को दबाओगे तब मुझ रणमल्ल के (वास्तविक) पराक्रम को देखोगे ॥३५॥

(हय हेडवि सवि हेजव्य गया,

वहि वल्लि मलिकक सलाम किया ।

हिव करिसु घरा रणमल्ल मय,

इम बोल्लइ हठि तोलत हय ॥ ३६ ॥

सभी दूत अपने घोड़ों को चला कर गए । जाकर अपने सरक्षक मलिक को सलाम किया । (सत्यश्चात् बोले)—(खुदाबद !) रणमल्ल (तो) अपने घोड़े की जांच करता हुआ इस प्रकार कह रहा था कि—अब (अतिशीघ्र ही) समग्र पृथ्वी को रणमल्लमय कर दूंगा । अर्थात् यवनो के शासन को समूल विनष्ट करके ही छोड़ूंगा ॥ ३६ ॥

नर केसरी ईडर सिहरि घणी,

जब हेजव मुहि फरियाद सुणी ।

तव चमकि डमक्कि मलिकक करी,

घसि घाडिइ घायउ धूस घरी ॥ ३७ ॥

ईडरनगाधिपति नरकेसरी (रणमल्ल) का वचन जब (मलिक ने) दूत के मुह से सुना, तब वह अपने नज्जकारों पर डका देकर (ईडर प्रदेश में) लूटने के लिए चल पडा ॥ ३७ ॥

॥ चुप्पइ ॥

पसरइ वडरवेस भयकर,

नर पोक्कारहि करहि निरतर ।

३५ बोलि कहइ मनवरलिमि वरविसि बहुत मुहिइ, पेखिसि मू ।

३६ गहवल्लि, बोलिइ ।

३७ शुरकेसरि, सिहरतणी, फरीआद, टमक्कि, मलिकि, घसी, घायु धुस ।

हमर वेगि गया ईडर तळि,

रावि रणमल्ल करइ साह सिहुलो ॥ ३८ ॥

मयकर यवन (मुटेरे) (ईडर प्रणेग म) फलने लगे । (उनके उत्पीडन से) प्रजाजन (नष्ट होकर) निरंतर घातनाद करने लगे । (बुद्ध सोग) अश्वमेघ से ईडर पहुँचे और रणमल्ल से महायन्त्र की पुकार करने लगे ॥ ३८ ॥

बिचहर भरि चुचारव वज्जइ,

जळहर जिम मीगणि गुण गज्जइ ।

बहु बलकाव करइ बाहुवलि,

घघळि घगड घरण घरणी तळि ॥ ३९ ॥

(हे रणमल्ल !) यवन भरि तथा चुचारव बजाते ह । (उनके) धनुषों की प्रत्यक्षाए मेघ क समान गजन कर रही है । बहुत से बलकाव (बलव देगीय यवन) यचना बाहुबल प्रकृत कर रहे हैं । (हम प्रकार) उत्तम पृथ्वी पर घुष मचा रखी है ॥ ३९ ॥

अरियण दारण ! दीन अमयकर,

पडरवेम यया निवभय घर ।

बभण बाळ बदि बहु विज्जइ

धा कमघज्ज धार करि लिज्जइ ॥ ४० ॥

हे शत्रु विदारक ! हे दीन अमयकारी ! इस भू भाग पर यवन बहुत ही निभय हो गए हैं । (उन्होंने) बहुत से ब्राह्मण एवं भवलाओं को बन्धो बना लिया है । हे कमघज ! (घाय) चलिए (और) (उन यवनों से) युद्ध करके (ब्राह्मण एवं भवलाओं को) यवन मुक्त कराइए ॥ ४० ॥

॥ पचचामर ॥

रउइ सइ आसमुइ साहसिक्क सूरइ,

कठोर धोर धोर छोर पारसिक्क पूरइ ।

अहय गाम मेह गाहि गालिबाल विज्जइ

विछोहि जोइ तेह नाथ ! मेच्छ लोडि लिज्जइ ॥ ४१ ॥

अत्याचारी यवन धीरों की शब्द स्वनि समुद्र पय त (प्रसारित) हो रही

३८ शीपक पर चुप्पइ नहीं दिया गया है । पसरीय, पोकार करिहि, करइ सहसा हुळि ।

३९ वज्जइ, गज्जइ, करिइ बाहुवलि, धू धडि घरिइ ।

४० अरियण शरण, यया नि भयकर किज्जइ, धार धर लिज्जइ ।

है। निष्ठुर एव तस्कर पारस देगीय यवन (समग्र प्रदेश म) व्याप्त हो रहे हैं। (वे) यवन हमारे घर व ग्रामों को नष्ट कर रहे हैं। (अत) हे स्वामी ! (घ्राप) (हमारे) विधोग को ध्यान म रखते हुए यवनों का मघन करके, उन (वदियों) को छोटा लाइए ॥ ४१ ॥

॥ इह ॥

जिम जिम कमघज चीतवड, असपति सरिसु विवाद ।

तिम तिम योगिनी रुहिर रसि, रत्ता करइ प्रसाद ॥४२॥

उषों ज्यों कमघज (रणमल्ल) बादशाह क साथ युद्ध करने का चितवन कर रहा था त्यों त्यों योगिनियाँ मत्त होकर (पूव सचित) रुधिर से प्रसाद ग्रहण कर रही थीं ॥ ४२ ॥

॥ सारसी ॥

परसादि बक्षि दिगत योगिनि जय जयारव अबरि ।

उछविक छविक दियत सिबखा वीर धीर घरावरि ।

दुदम्भ मेच्छ विछोह रोहम खोहि गाह्वि किज्जइ ।

तू हट्टि उट्टवणीइ हट्टवि लोह हत्थ लिज्जइ ॥ ४३ ॥

दिग दिगतर की योगिनियों को प्रसाद दीजिए। (ऐसा कहते हुए) (वे योगिनिया) आकाश में जय जयकार करने लगी और अत्यंत तृप्त होकर पृथ्वी के श्रेष्ठ वीर तथा धीर (रणमल्ल) को शिक्षा देने लगीं—(हे रणमल्ल) दुदम्भ यवन क्षीमपूर्वक आक्रमण करने (प्रजा को) नष्ट कर रहे है। (अत) तुम (उन्हें) पराजित करने के लिए (अपने) हाथ म शस्त्र धारण करो ॥ ४३ ॥

॥ इह ॥

जिम जिम लसकर लोह रसि, लोडइ सासन, लविख ।

ईडरवइ चउसइ चडइ, तिम तिम समरि कडविक ॥ ४४ ॥

४१ शीपक पर छद का नाम नहीं दिया गया है। खड्ग, साहसीक सूरया, कठोर चोर छोर घोर पारसीक पूरया। अहङ्ग गाम गाह गेय बाल-नाल किज्जए, ताह तेह मेछ, लिज्जए।

४२ शीपक नहीं दिया गया है। चीतविइ करिइ।

४३ शीपक नहीं दिया गया है। प्रसाद लक्ष दियति उछविक उट्टि, सिखा वीर धार घरातले, दुट्ट मिछ छोहि जोइ खोहि गात्त किज्जए, निहट्टि उट्टि रच्छ उडण लोह हत्थ लिज्जिए।

उयो उयो सनिक मगूह (घाते) घात्र बल से (यवन) राग्या के मदन
 का दिवार कर रहा था, (उसे) जान कर रघों-रघों ईडराधिपति (रणमल्ल) की
 सहायताप योगिनियो बढबती हुई पढ़ी ॥ ४४ ॥

॥ पचचामर ॥

कडकिर भू छ भीछ मेच्छ मल्ल मोलि मुगगरि ।
 चमविकु चल्लि रणमल्ल भल फेरि सगरि ।
 धमविक धार छाडि धान छडि घाडि धगगडा ।
 पडकि वागि (वाटि) पवरुडत मारि मीर मककडा ॥ ४५ ॥

यवन सभ्य में योडा कडक रहे थे । रणमल्ल (अरन) भाले को घुमाना हुआ
 मुद्ध क लिए चला । (उसके) गस्त्रों की घमक मुनकर यवन सैनिको ने घन्न खाना
 मीर लूट-खसोट करना छोड दिया । (वह रणमल्ल) (उन) यवन सरदार रूमी मकडा को
 टके की चोट पकड लेता था ॥४५॥

॥ चुप्पड ॥

हय खुर तळ रणइ रवि छाहिउ,
 समुहर भरि ईडरवड आइउ ।
 खान खवास खेलि बलि घायु,
 ईडर अडर दुग तळ गायु ॥ ४६ ॥

अश्व-पद रज से मूय आच्छादित होगया था । सेना के अग्रभाग में स्थित
 ईडराधिपति (रणमल्ल) आया । (उसने) खेल खेल म ही खवासखान को पकड लिया
 तथा (उसे) ईडर के अश्वेय दुग की तलहट्टी में पछाडा ॥४६॥

दम दम करि (वार) दमाम दमवकइ,
 ढम - ढम ढम - ढम डोल ढमवकइ ।
 तरवर पडरवेस पहट्टइ,
 तर - तर तुरक पडइ तलहट्टइ ॥ ४७ ॥

- ४४ शीपक आर्या है । लोडि, लछि, ईडरवे चउ सिइ चडिउ,कडछि ।
 ४५ शीपक पर छद का नाम नहीं दिया गया है । कडछि मु छ मोलि
 मल्ल मेछ भीछ मोगरे, रणमल्ल, सगरे, घडकि धार घाडि
 छोडि धान छोडि धू बडा, पवित चित पकडति मकडा ।
 ४६ शीपक पर चुप्पड नहीं दिया है । ताल, रेणी, तव समहर,
 आयु, तलिघायु ।

दम-दम गद करन हुए नगाडे तथा दम टम शब्द करते हुए टोल बज रहे थे ।
 यवन (मनिक्) मदान से ईडर की तलहट्टी में त्वरित गति से प्रवेश कर रहे थे ॥४७॥

विसर विरग वग र्व पसरइ,
 रहि रहिमान मनतरि समरइ ।
 गह गुज्जारि निमाज करानी,
 हयमर फोज फिरइ सुरताणी ॥ ४८ ॥

बुरूप यवनों की बाग की विसर ध्वनि फैल रही थी । (वे) मन के आदर
 रहमान का स्मरण कर रहे थे । (उन्होंने) प्रायना स्वरूप नमाज पढी (तब तब)
 सुल्तान की आश्वसेना घूम रही थी ॥ ४८ ॥

सत्तिरि सहस सहिय सिल्लारह,
 दहु दिसि फिरवि करि पुक्कारह ।
 सुहड मद् समळिवि रउद्दह,
 घसमस घूस करइ मफरद्दह ॥ ४९ ॥

(सुल्तान के) सतरह सहस्र योद्धा स्वरूपाय दगों दिगार्जों में चिल्लाते हुए
 फिर रहे थे थोर (साथ ही) मुमट्टों के गर्जनों को सुन कर (वे) अकेले प्रकेले घोड़ा
 भी बजा रहे थे ॥४९॥

॥ हाडकी ॥

मद भीभळ सेरवचा वगाली मूगळ महामलिक ।
 ईडर अद्दर सिक्खरि रणयम्मरि तळि तरवरइ तुरक्क ।
 हक्कारवि विक्कट बहकटि चल्लइ बुल्लई विरद बहुत्त ।
 सुरताण मरिस सिल्लार सिपाही सवि मिळि समरि पुहुत्त ॥५०॥

मद विह्वल सेरवचा तथा वगाली यवन सरदार ईडर के ऊंचे शिखरों के मध्य
 तथा रणस्नग्म के पास द्रुत वेग से आ रहे थे । (वे) विकट हुंकार करते हुए चल
 रहे थे तथा (साथ ही) अपने गुप्त का अख्यान कर रहे थे । (इस प्रकार) सुल्तान
 के समान ही सभी निर्भय योद्धा सम्मिलित होकर मुट्ट स्थल पर पहुँचे ॥५०॥

४७ दमाम दमक्कीय, दमक्कीय पडिइ तलहट्टीय ।

४८ पसरीय, समरीय, करानीय, फिरइ सुरताणीय ।

४९ सहोय, करिइ, रवद्, हसमस हास करिइ ।

५० शीपक नहीं दिया गया है । सीरवचा वगालीय, मुहा, अद्दर
 सिह्र, तरवरीय, हकारवि विक्क, चल्लिय, बुल्लवि, मरिसु
 सवाहीय ।

तळहट्टिइ मेल्लवि तरळ तुरक्की तार ततार तुग्ग ।
 उल्लट्टिय असपति असणिअ वायरिसायर वेलि तरग ।
 हल हल विगरी विगरी बोननिअ नीर लहरि छिल्लत ।
 रण वदळि कळह करइ किलवायण वायर नर रेलत ॥५१॥

ईडर की तलहट्टी में भिडने के लिए बादगाह व (सेनापति) तुरकी, तार और ततार देश के चल घोड़ों को लेकर वायु में उलान विद्युत एव सागर में उत्पन्न तरंगों के समान चल पड़े । (उस समय) हन हन तथा विगरी विगरी बोलने हुए (यवन) समुद्रीय तरंग के समान सुशोभित हो रहे थे । युद्ध भूमि में (उनके) युद्ध को देख कर वायर मनुष्य (उनमें) मह जाते थे । अर्थात् युद्ध विमुक्त होकर भाग जाते थे ॥५१॥

हेखारवि हयमर हसमसि खुररवि असणि किपाण वसत ।
 उद्धसवि वसाकसिअ सितर विसि घसमसि घरणि घसत ।
 भू मडळि भड कमधज भडोडडि भुजबळि भिडस भिडत ।
 रणमल्ल रणाकुल रणि रोसाहण मुणसत्तणि तु वरत ॥५२॥

(रणमल्ल की) मश्व में व के मश्वो की हसमम, पदचाप और सत्तरवीसी (योद्धाओं) के वज्रतुल्य तलवार एव कमरपट्ट बसने की घसमस से पृथ्वी घस रही थी । पृथ्वी के सबश्रेष्ठ वीर राठौर अपने चापत्यपूण भुजबल से (यवन) योद्धाओं से भिड रहे थे । रण के लिए व्याकुल और रोष से सतप्त योद्धाओं को (उस युद्ध में) अस्तराए वरण कर रही थी ॥५२॥

उल्लाळवि भालवि जुजभ कमालह लथबधि लोधि लडत ।
 धारक्कट धारि धगड धर घसमसि घसमसि धुव्य पडत ।
 कमधज्ज उदयगिरि मडण सविता भलमल मल्ल भिडत ।
 धुरि धसि धसि धू स घरइ धगडायणि धर वरि रु ड रळत ॥५३॥

रणों के परस्पर लड़ते हुए और वेग के साथ परस्पर पकड़ने की क्रिया से युद्ध में आश्चर्य उत्पन्न होगया । शस्त्र प्रहार से कट कट कर पृथ्वी पर गिरते हुए यवनों की घसमस घसमस ध्वनि हो रही है । उदयाचल को सुशोभित करने वाले सूर्य की तरह प्रकाशमान राठौर योद्धा भिड रहे हैं । (वे) सबप्रथम (अपने) नक्कारों पर

५१ तळहट्टिय मेल्लवि, तुरक्कीय, उल्लट्टिय, वायर, ततार । बोलनीय, कदळ, करिइ ।

५२ खुररवि, हसमसि, असणि, नर नर वसि, भड रणमल्ल भिडस मिळत, तरव त ।

सा भे है, (तत्पश्चात् आक्रमण करके) यवनों के रुण्डों का धूलि में मिला देते हैं ॥५३॥

॥ चुप्पड़ ॥

वर कमघज्ज वीर शासन छळि,
कित्ति फुरइ नव खडि घरा तळि ।

असपति सरिसु इवक ईडरवइ,
रण रणमल्ल मू छ मुहि मुखई ॥५४॥

आठ राठौर (रणमल्ल) की कीर्ति, वीर शासन के लिए पृथ्वी के नवखडों में प्रसारित हो रही है । (इस समय) बादशाह के समक्ष युद्ध में मात्र एक ईडराधिपति (रणमल्ल) ही (अपनी) मूर्छो पर ताव द सकता है । अर्थात् सुलतान के समक्ष लड़ने का रणमल्ल को छोड़ कर अब किसी भी राजा या साहस ही नहीं होता है ॥५४॥

असुर अभग अग ईडर तळि,
असपति दळ कोलाहल सभळि ।

वभण बाल सुराह अबला छळि,
हठि उठिउ कमघज भुजाबळि ॥ ५५ ॥

ईडर की तलछट्टी में सुलतान के अगत यवन सैनिकों का कोलाहल सुनकर प्राद्वेष बालक गायों और स्त्रियों की रक्षाय बाहुबली कमघज (रणमल्ल) उठा ॥५५॥

पखरि पडरवेस भिडतु
घसि घगडायण घूस घरतु ।

टणि हणि मुणसिम भणई असभम,
ताल मिलिउ हरि जभ तणउ जिम ॥ ५६ ॥

(वह) कवचित यवनों में भिड़ता हुआ घबरा कवचित घोड़ की पीठता हुआ और घबने नषकारों पर टका देता हुआ, यवन सैन्य में प्रविष्ट हुआ तथा मारो मारो कहता हुआ एवं शत्रु शत्रु उच्चारण करता हुआ जिस प्रकार भगवान जन्मासुर से भिडे थे (उसी प्रकार) ईडर की तलछट्टी में (यवन म य स) भिड गया ॥ ५६ ॥

५३ भुक्त, लघि बधि, पडत, धार, घसमिति घसमिति, कमघज
भलहल भिडन्त, घरि घरि घरि घूस घरि घगडायण ।

५४ शीपक पर चुप्पड़ नहीं दिया गया है । वर हमीर वीर, फुरिइ,
खण्ड, ईडरवि, मु छ निरखिइ ।

५५ अबल सुरही, कमघज ।

५६ पखर, घूस, हणि हणि भणि मुणस, मित्यु हरि जभ तणु ।

दुज्जण खल इक्क दावानळ ह्यमर,
हठि हेडवि कोलाहळि ।

रणवाउलु रणमल्ल रणाकुल,
असि रसि गाह करइ गोरी दळि ॥ ५७ ॥

रणोत्त एव रणाकुल रणमल्ल (अपने) दावानल रूपी घोड़े को शत्रुओं की ओर चला कर कोलाहल उत्पन्न करता हुआ तलवार से यवन स य को नष्ट करने लगा ॥ ५७ ॥

॥ दुमिला ॥

गोरी दळ गाहवि दिट्टु दहु दिसि गडि मडि गिरि गह्वरि गडिय ।

हण - हणि हक्कतउ हु हु ह्य ह्य हुकारवि ह्यमरि चडिय ।

घडहड तउ धडि कमधज्ज धरातळि धसि धगडायण धूस धरइ ।

ईडरवइ पडरवेस सरिसु रणि रामायण रणमल्ल करइ ॥ ५८ ॥

सभी ओर यवन सैनिकों द्वारा नष्ट किए हुए गढ मठ एव पर्वतों के अन्दर स्थित गडियों को देख कर रणमल्ल (अपने) घोड़े पर चढ़ा हुआ, मारो मारो की वीर हक्क से (शत्रुओं को) ललकारने लगा । (तत्पश्चात्) नक्कारों पर डफा देते हुए तीव्र वेग से यवन स य में प्रविष्ट हुआ और (वह) ईडराधिपति वीर रणमल्ल युद्ध में यवनो के साथ लड़ने लगा ॥ ५८ ॥

रोमचिय रण रसि (स) राडिरावण रहि रहि बल बोलत वळि ।

पखर वर पुट्टि पवगम पट्टिय पहुतउ पह पतसाह दळि ।

असि मारवि रूव रणायरि रगडिन्न भजइ धगड महा भडया ।

रणमल्ल रणगणि मोडि मिळता मेच्छायण भू गळ मु(मि)डिया ॥ ५९ ॥

वीर रणमल्ल युद्ध में रोमाचित होता हुआ और शत्रुओं को ठहरो ठहरो लनकारता हुआ घोड़े की पीठ पर सुदूर जीन बस कर बादशाह की सेना में पहुँचा और अपनी तलवार की मार से पर्वतोपम यवनों को मर्दित करता हुआ (उन) विशाल यवन सुभट्टों को विनष्ट करने लगा । (इस प्रकार) (उसने) युद्धस्थल पर भिडले ही यवन स य के गज समूह अथवा यवनों को मर्दित करके मोड़ दिया ॥ ५९ ॥

५७ दुज्जण भुज्ज इक्क, कोलाहल करिइ ।

५८ शीपक नहीं दिया गया है । दहु दिसि' गडि गुहि गडिम् गहिय, हणि हणि हक्कतु, घडहडतु धडि हम्मीर कु सि धरिइ, करिइ ।

५९ रोमाचचीय रण रसि रव रडि रावण, बोलत वळे, पखरव, पुहुतु दळे, मरि रवि, रणायर रगडय भज्जिइ, महा लडया मेच्छायण मोगर ।

मृदु उच्छ्वलि मूछ मुहच्छवि कच्छवि भूमइ भूछ समुच्छि लिया ।
 उन्लाळवि खग करगिग निरगळ गणइ तिणइ दळ अगलघ्रा ।
 प्रलयकरि लमकरि लोहि छवच्छव छट करइ छत्रीस छलि ।
 रणमल्ल रणगणि राउन विलसइ रवितळि खितिय रोस वळि ॥ ६० ॥

(वह रणमल्ल) पुन उद्वलकर (शत्रुआ की) मुलगोमा स्वरूप मूर्छों
 की बाग्या हुआ (स्वय) अपनी मूर्छों को (सवारी हुई) लिए हुए घूम रहा है ।
 (उषव) अङ्ग प्रहार से हाथ कटे हुए (शत्रु) सेना के अग्रभाग में (पीछा छे)
 कराह रहे है । (इस प्रकार) राउन रणमल्ल छत्रीम कुल के मन्त्रियों की गथाय
 युद्धस्वन की प्रत्यकारी सेना में (भारी) रक्त की वर्षा करता हुआ, (इस) मूय के
 नीचे पृथ्वीतल पर अग्ने वन से विनसता है ॥ ६० ॥

सीचाणउ रा कमधज्ज निरगळ ऋडपड चडपड घगड चिडा ।
 भडहड करि सत्तिरिसहसभडवइ कमधजभुजभ(भ)टवायभ(भ)डा ।
 खति तणि खय करि खमखर खू दिय खान मान खडत हुया ।
 रणमल्ल भयकर वीर विडारण टोडरमलि टोडर जडिया ॥ ६१ ॥

कमधज राव रणमल्ल रूपी बाज की काटने वाली भडप से यवन रूपी चटवों
 में सुसर घूमर हो रही है । (वे) सतरह सहस्र यवन, कमधज वीर के बाहुयन रूपी
 भडी से भडहट करते हुए चौक उठते है । (इस प्रकार) पृथ्वी के क्षयकारी यवनों के
 विनष्ट हो जाने पर खान का गव खडित होगया और भयकर वीरों को तितर बितर
 करने वाले वीर शिरोमणि रणमल्ल ने (अनेक) योद्धाओं को नष्ट कर दिया ॥ ६१ ॥

॥ चुप्पइ ॥

सोनगिरउ क हड सिम्भरवइ,
 वेडि करि गज्जणवइ असुरइ ।
 वहु दिसि दुज्जण दळ दावट्टिय,
 सोमनाय वड हत्वइ भट्टिय ॥ ६२ ॥

सोनगिरा चौहान काहूदेव न गजनीपति यवन के साथ युद्ध करके समी और

६० मूछ छलिमु छ मृदु छवि कछवि भ्रू छरि मु छ समु छनया,
 गणि तमिङ्गळ अगलया, लय लय करि, लोह छव छत्रछञ्छट
 करिइ छत्रीस छने, विलसिइ, रोसवसे ।

६१ सीचाणु षडपिड, भडवकीइ सत्त तणि हयमर फाररवि खू दी
 खानमान सू दति हया, विडारीय, टोडरमल्ल ।

के दाम्नु स य को नष्ट करते हुए सोमनाथ की मूर्ति का अपने सबन हाथों से छीन लिया था ॥ ६२ ॥

आदर करि सकर थिर थप्पिय,
अचळ राज चहुआण समप्पिय ।
असपति सरिसु साह सिम बक्कड,
मुरट मान रणमल्ल न मुवण्ड ॥ ६३ ॥

(तत्पश्चात् वा हृष्टत्वेने) आदर के साथ उस) दाकर की मूर्ति को पुन प्रतिष्ठित किया । (भगवान शंकर ने इस काय से प्रसन्न हुए) चौदानों को अचल राज्य समर्पित किया । बादशाह से साहसिम करने लगा—(मोतगिरा का हृदय की तरह ही) रणमल्ल भी स्वाभिमान एवं मर्यादा का परित्याग नहीं कर सकता है ॥ ६३ ॥

मरडो मूछ वडो मुहि मडड
मेच्छ सरिसु गह गाह न छडड ।
कसवड काळ किवण करट्टिय,
जा रणमल्ल रोस वमि उट्टिय ॥ ६४ ॥

(उसका) मुह मरोडी हुई मूछा से सुशोभित हो रहा है । (वह) यवना से बैर का परित्याग नहीं कर सकता । जब (रणमल्ल) रोषवण (युद्ध के लिये) उठता है (तब वह ऐसा प्रतीत होता है), (मानो) यमराज (आने) हाथ म कृपाण धारण किए हों ॥ ६४ ॥

पडरवेम डरड ममरि बाहुवज्जि
खग ताल जिम तोलड करतळि ।
ढुज्जड दड दुदम दुहडड,
इक्क अनेकि मलिकर विहडड ॥ ६५ ॥

रणमल्ल जिस प्रकार युद्ध स्थल में बरगत करवाल को तोलता है, (उस) बाहुबल के स्मरणमात्र से यवन भयभीत होने लगते हैं । (वह) दड का द्वितीय रूप

६२ शीपक पर चुप्पड नहीं दिया गया है । सोनगिरी सतल सिमर विड वेगि करि असुरह गज्जणविड, दहदिसि, दावट्टी, चौवा चरण है ही नहीं ।
६३ राज वमघज्ज, मुक्किड मू कड ।
६४ मुरडि मूछ मुहवडो चडि मण्डीय, मेछ सरिसु ढोह नवि छडिड,
कसवे, करट्टीय जोउ, उट्टीय ।

रणमल्ल छड

तथा दुदम्भ (गन्धुआ को) दडित करके छोड़ता है । (वह) अनेला ही अनेक
लिकों को नष्ट कर देता है ॥ ६५ ॥

॥ भुजगप्रयात ॥

जि बुघाअ बुबा उलविक सलविक,
जि बविक बहविक लहविक चमविक ।

जि चगी तुरगी तरगि चडता,
रणमल्ल दिट्टेण दीन दडता ॥ ६६ ॥

(उसके भय से) जो नक्कारची है, (उनके) नक्कारे फिसल कर गिर
पड़ते हैं, जो बडो बडो बातें करते हैं वे लहक मात्र से बहक जाते हैं और जो यवन
मुदर तथा अच्छे घोडो पर चढत थे (वे) रणमल्ल को देख कर (पैदल ही) नी
दो ग्यारह हो जाते हैं ॥ ६६ ॥

जि मुद्दास मुद्दा सदा रुद्दा सदा,
जि बुबाळ चुबाळ यगाळ वदा ।

जि भुज्भार तुक्खार कम्माल मुविक,
रणमल्ल दिट्टेण ते ठाम चुविक ॥ ६७ ॥

जो उप्पास, प्रस न चित्त और हमेशा रोनी आवाज वाले, नक्कारबद चबल
और बगाल निवासी यवन योद्धा है (वे सभी) रणमल्ल को देखते ही तलवार एव घोडों
को छोड़ देते हैं और स्थान अष्ट हो जाते हैं ॥ ६७ ॥

जि रुक्का मलिकका बलकका कपाडी,
जि जुद्धा मुडुद्धा सनद्धा भजाडी ।

तिभू आ खाडीआ घडी दड किज्जि,
रणमल्ल दिट्टि मुहि घास लिज्जि ॥ ६८ ॥

जो अम्मार मलिक, बलख देश के, कापडी (इत्यादि यवन हैं), जो युद्ध में
मुदों को भी भगा देते हैं जिन्होंने घडियाल के डडे के समान चोट करके तीनों भवनों

६५ डरहि, खडग ताल तोलिइ यम हाथळि, उडुण्डिभ दूभ दुदम्भ
दुहण्डिइ, एक अनेक, विहण्डिइ ।

६६ जि बुवे अ लवे उलवके सलविकइ, जि बवके बहवके लहविकके
चमुविकइ, जि चगे तुरगे तरगे चडता, रणमल्ल, मुडता ।

६७ यमुद्दा, बम्बाल, भुम्भार, तुक्खार मुविकइ, ठामचुविकइ ।

६८ रुक्का, कि बुठ्ठा पहल्ला सनद्ध विभाडिइ, ति आखडी भूदण्डि
बहु खडि किज्जिइ, रणमल्ल दिट्टे मुहे घास घन्लिइ ।

को (भर्षात् सभी को) वशीभूत कर लिया है, व सभी यवन रणमल्ल को देखते ही मुह मे घास ले लेते हैं ॥ ६८ ॥

जि बवका धरवका सरवका वहता

जि सव्वा सगव्वा झरव्वा सहता ।

जि जूज्जार उज्जार हुज्जार चल्लि,

रणमल्ल दिट्ठि मु हि घास घल्लि ॥ ६९ ॥

जिनके वचन तीक्ष्ण शर के समान चलते थे । जो सभी सगव प्रहारों को सहते थे । जो योद्धा हजारों लोपा को उत्राड म चलने के लिए (विवश) कर देते थे, (वे स्वयं) रणमल्ल को दण कर मुह मे घास दबा लेते हैं ॥६९॥

॥ छप्पय ॥

हिव किरमाळ पहारि धारगढ गाह्वि छड्ड ।

कम वेकडी किवाण पट्टि किलवायण पड्ड ।

भुजवनि भल्लइ भिडिअ मरी भय भयुअचि पड्डु ।

धरीअ खभाइच्च असुर सिर चपवि बइसू ।

प्रह ऊगमि पट्टणि पट्ट करि, घगढायण घघळि घरु ।

ईडरवइ रा रणमल्ल कहि, इक्क छत्त रवि तळि करु ॥ ७० ॥

ईश्वराधिपति राव रणमल्ल कहता है कि—(मैं) अपने असिप्रहार से धारगढ के (यवनो को) नष्ट करके छोडूंगा । कवच और कृपाण बाध कर मुगलों के घासन को स्ववश कर लूंगा । हस्तगन माल म मिड कर (यवनां म) भय का संचार करता हुआ भरोच म प्रवेग करूंगा । यम्माइच के यवन को अपने अधिकार में करके (उम) असुर के मत्तक को दबा कर ही चन लूंगा । सूर्योदय के होते ही पट्टण को नष्ट करके (बटा की) यवन सँघ मे घुद मचा दूंगा । (इस प्रकार) सपत्न पृथ्वी पर (अपना) एकाधिकार स्थापित कर लूंगा । भर्षात् समग्र देस स यवनो को मार कर भगा दूंगा ॥ ७० ॥

६९ बुवका, जि सद्दा सगद्दा जरद्दा सहता जि झक्षार उक्षार
हक्षार चल्लिइ, रणमल्ल दिट्ठि मुहे ।

७० शीपक पर कविता है । पहरि, गाह्वि, करि, किलवाण इ,
भल्लि भिडोय, भयभरि भयुअचि पिसू, घरु अ उम्मा छत्त,
विसू, प्रहि, घू पळि, इडरवै, एअछत्त ।

शब्द-कोष

अ

अग=मनिक्
 अगोअगी=परस्पर
 अबर पुड तळि=आकाश मे
 अबरि=आकाश मे
 अगर प्रास=शासित ग्राम
 अगइ=आगे
 अगनघा=आगे अगला
 अचल=स्थिर
 अडर=निभय
 अनेकि=बहुत
 अभग=वीर
 अरक्का=आरा
 अरदाम=प्रायना
 अस्तई=प्रश्व पर
 असणि=वज्र
 असणिअ=वज्रस्वरूप
 असपति=वादनाह
 असलीइ=विद्युद (खास)
 असिरसि=तलवार से
 असुर=यवन
 असुहुउ=अशुभ
 अहग=युद्ध म हमारे ?
 आ

आण=आया, आण
 आ=इ होने
 आदर=सत्कार
 आपू=हू

आलमि=सत्तार म

इ

इक=एकाकी
 इकछत=एकाधिकार
 इम=इस प्रकार

उ

उज्जार=बिना माग के
 उधसइ=आगे बढ रही थी
 उरि=हृदय

उनविक सलविक=फिमल कर गिर
 पडन

ऐ

ऐयार=गुप्तचर बहुत बडा घूत ओ
 चालाक

क

कध=स्वध
 कटव=सेना
 कठोर=निष्ठुर
 क'हड=का'हड देव सोनगिरा
 क मधअ=राठोर
 कमल=मस्तक, पुष्प
 कम्माणिया=धनुष
 कम्माल=तलवार, आश्चय
 कम्मालह=मस्तक, आश्चय
 कर=हाथ
 करगि=हाथ
 करतलि=हाथ मे
 करि=हाथ म करके

कलरवि = ध्वनि से
 कस = बाध कर
 कसी = कमरबंद
 कायर = डरपोक
 काहल = एक युद्ध बाद्य
 किति = कीर्ति
 किद्धउ = किया
 किपाण = तलवार
 किवाण = तलवार
 किमइ = किसी भी प्रकार
 किरमाल = तलवार
 किन्वायण = यवन सेना
 कुमन = कोमल
 कोस = खजाना
 कोडि = प्रत्येक

ख

खति = लग्नपूजक
 खवलर = यवन
 खग = तलवार
 खाडिषा = बगी मूल कर लिए
 खिजमत्तो = सेवा
 खित्ती = पृथ्वी
 खित्तीय = पृथ्वी पर
 खु दाळम = बीर बादगाह
 खु = स्वयं

ग

गज्जणवइ = गजनीपति
 गडि = गड
 गय = हाथी ऊट
 गयणुगणि = भाषांग
 गह = समय स्थान
 गहगाह = बर

गहिर = गभीर
 गाम = ग्राम
 गायु = पछाहा, मदन किया
 गाह करइ = नष्ट करता है
 गाहवि = नष्ट किए हुए
 गुजजार = प्रायना
 गुण = धनुष की डोरी
 गेह = घर
 गीरोदळि = यवन सेना

घ

घणु = बहूत
 घल्लि = नष्ट करो

च

चगि = अच्छे
 चवल्लि = घोड़े पर
 चपई = दबाता
 चपिसि = दबाया जायेगा
 चउ = की

चमविच = चमत्कृत करता हुआ भयभीत
 चल्लावि = भेजा
 चास = पृथ्वी
 चिडा = चटक गीरया
 चिहू = चारों
 चुत्रिक = चूक गते हैं

छ

छलि = के लिए मुड

ज

जइ = जारर
 जडिमा = नष्ट किया
 जरइ = बबब
 जळहर = मेघ
 जव = जब

बां=बवनक जव
 त्रि=त्रो, त्रिनके
 त्रिम-त्रिम प्रकार जसे
 बडा=बुद्ध में

झ

मट्टिय=छोन लिया
 मडाई=भपाटे से
 मडा=प्रहार से
 मरबरा=प्रहार
 माळ=लपट
 मुग्गमा=घोडा
 मुफ़=बुद्ध

ट

टोडर=वीर
 टोडरमलि=वीर शिरोमणि

ठ

ठाम=स्थान

ड

दहनिय=घेरा

ढ

ढाली=एक गायक जानि

त

तणि=गति की
 तणु=बा
 ततार=एक यवन देश
 तरणि=षषळ
 तरणी=मूर्ध
 तरतर=धीप्रना मे
 तरन=षषम
 तरवर=पीप्रना मे
 तळ=मस की
 तनि=तसही में

ता=तब तक

तार=एक यवन देश

तिवव=तीमे बढिया

तिम=उसी प्रकार

तु=तुम्हें, तुम्हारी

तुवतार=घोडा

तुरगी=घोडा पर

ते=वे

तेजी=घोडा

तोलत=परीक्षा करता हुआ

तोलई=जाचता था

त्रण=तीन

थ

थणिय=स्थापित किया

थाट=समूह

थिर=स्थिर

द

दडवड=एक बुद्ध बाघ

दळ=सेना

दहु दिसि=दर्मों दिगाधों में

दाम=घन

दाहणु=मयकर

दावट्टिय=नष्ट करके

दास=सेवक

दिट्ट=दिया

दिट्टउ=दिया

दिसि=दिगाधों में

दुग्गउ=दुजय

दुग्गण=गु

दुग्गण दळ=दुग्गुओं की सेना

दुद् म=दुग्गुनीय

दुद्दुद्=दडित्त करता है धुमता है

कलरवि = छवि से
 कस = बाप बर
 कसी = कसरबद
 कायर = डरफोक
 काहल = एक युद्ध वाद्य
 किति = कीर्ति
 किद्धउ = किया
 कियण = तलवार
 किकाण = तलवार
 किमइ = किसी भी प्रकार
 किरमाल = तलवार
 किलवायण = दवन सेना
 कुमर = कोमल
 कोस = खजाना
 कोहि = प्रत्यथा

ख

खति = लग्नपूजक
 खखर = दवन
 खग = तलवार
 खादिषा = वगीभूत कर लिए
 खिजमस्ती = सेवा
 खिती = पृथ्वी
 खितीप = पृथ्वी पर
 खु दाळप = वीर बादगाह
 खु = स्वयं

ग

गजजणवइ = गजनीपति
 गडि = गड
 गय = हाथी ऊट
 गयणगमि = भाषाण
 गह = समय स्थान
 गहगाह = बर

गहिर = गभीर
 गाम = ग्राम
 गायु = पद्याडा, मदन किया
 गाह करइ = नष्ट करता है
 गाहवि = नष्ट किए हुए
 गुजमार = प्रायना
 गुण = धनुष की डोरी
 गेह = घर
 गोरोदळि = दवन सेना

घ

घणु = बहून
 घहिल = नष्ट करो

च

चगि = अच्छे
 चबलि = घोड़े पर
 चपई = दबाता
 चपिसि = दबाया जायेगा
 चउ = की

चमविन = चमत्कृत करता हुआ भयभीत
 चत्तावि = भेजा
 चास = पृथ्वी
 चिडा = चटक गोरमा
 चिहू = चारों
 चुत्रिक = चूक जाते हैं

छ

छलि = वे लिए युद्ध

ज

जइ = जाकर
 जहिया = नष्ट किया
 जरइ = बचप
 जळहर = मेघ
 जब = जब

बां=यवनक जव
 बि=बो, बिनके
 ब्रिम=ब्रिस प्रकार जमे
 बडा=बुद्ध में

झ

भट्टिय=छीन लिया
 भडाई=भगाने से
 भडा=प्रहार स
 भरब्बा=प्रहार
 भाळ=भप
 भुग्गा=योद्धा
 भुम=युद्ध

ट

टोडर=वीर
 टोडरमलि=वीर गिरोमणि

ठ

ठाम=स्थान

ड

डहनिय=पेरा

ढ

ढोली=एक गायक जानि

त

तलि=गति की
 तणु=बा
 तसार=एक यवन देग
 तरगि=षषळ
 तरणी=सूय
 तरतर=छीप्रता मे
 तरम=षषम
 तरवर=छीप्रता म
 तळ=मने की
 तवि=तसारी में

ता=तब तक
 तार=एक यवन देश
 तिकव्य=तीखे बढिया
 तिम=उसी प्रकार
 तु=तुम्हें, तुम्हारी
 तुक्कार=घोडा
 तुरणी=घोड़ा पर
 ते=वे
 तजी=घोडा
 तालत=परीक्षा करता हुआ
 तोलई=जाचता था
 त्रण=तीन

थ

थणिय=स्थापित किया
 थाट=समूह
 थिर=स्थिर

द

दडवड=एक युद्ध वाद्य
 दळ=सेना
 दहु दिति=दमों दिगाओं में
 दाम=घन
 दाहणु=भयकर
 दावट्टिय=नष्ट करके
 दास=सेवक
 दिद्ध=दिया
 णिद्धर=दिया
 णिसि=दिगाओं में
 दुग्खर=दुजय
 दुग्खण=गद्दु
 दुग्खण दळ=गद्दुओं की सेना
 दुद् म=दुग्खणीय
 दुद्दर=निश्चि करता है घुमाता है

दुद्दुदिसि=दोनों दिशाओं में

ध

धधळि=धु ध

धगड=यवन

धगडायण=यवन सेना

धणी=स्वामी

धर=पृथ्वी

धरणितलि=पृथ्वी पर

धरवि=धारण करके

धरा=पृथ्वी

धरि=पकड कर

धरिय=पकड कर

धरित=धुमकर

धाडि=लुटेरा आवाज सूट

धाडिइ=लूट करने

धान=अन

धायड=चला

धायु=पकडा, चला

धार=युद्ध गस्त्र

धारकरि=युद्ध करके धारत्र चलाकर

धुब=ध्वनि

धुरि=प्रथम

धुस=नगाडा नगाडे की ध्वनि

न

नइ=तथा

नग=गहाड

नडी=स्वयंग कर लिया था

नयर=नगर

नह=नही

निकर=समूह

निभय=निभय

निरतर=नगाडार

निरगल=कटे हुए

निसि=रात्रि म

निहृटि=गुप्त

प

पडरवेस=यवन, घोडा

पइयू=प्रवेग कह गा

पवखर=धरव कवच

पवखरि=कवचित

पट्टवरि=नष्ट करके

पटइ=गिरते थे, आक्रमण करते थे

पडविकु=नगाडा

पडरि=नष्ट करके

पय=पद खीर (साभिप्राय)

पराणु=चडाई

पवगम=घोडे की

पसरइ=फलते हैं

पह=राजा

पहट्टइ=चीक म

पहारि=प्रहार से

पहत्त=पहुंचे

पासि=पास म

पुण=पुन

पुट्टि=पीठ पर

पुणु=पुन कहता हू

पेविलसी=देवेगा

पोक्कार=पुकार

प्रहि=प्रात कास म

प्रह उगमि=सूर्योत्थ के साथ

फ

फर फर=जल्नी-जल्नी

फरमाणियां=घाणाए

फार=बहुत

फारफ = ध्वजाएँ सैनिक
फुरमाण = फर्मान, आज्ञा-पत्र
फुगराइ = यवनपति

घ

घपरव = बाग की ध्वनि, वगालियों की
ध्वनि

बभण = ब्राह्मण

बन्नि = बंद

बदू = बदगी करना

बक्कइ = पुकारते हैं कहुता है

बक्का = बचन

बक्कि = बोलने वाले

बल = शक्ति को

बनकाक = यवन

बल्लि = स्वामी सरक्षक

बाळ = स्त्रिया बालक

बाहु बलि = शक्ति का

बिबहर = यवन

बु बा = नक्कारे

बु बाभ = नक्कारची

बु बारव = एक युद्ध-वाद्य

बु बळ = नक्कारे वाले

मुल्लइ = बहा करने हैं

बुल्लिठ = बोला

वेकडी = बवच

भ

भग्गठ = भाषा

भणइ = बहता हुआ

भरळि = ध्वनि

भल = भाला

भत्तइ = भासे से

भाण = मूय

भारिभ = विशाल

भिडम = योद्धा

भीछ = वीर

भू छ = वीर

भूरि = अत्यधिक

भेरि = भेर (वाद्य)

म

मडइ = सुशोभित होता है

मडि = तत्पर

मत्र = सलाह

मक्कडा = बदरो को यवनों को

मच्छर = मात्सय

मडि = देवस्थान

मदभीभळ = मद विह्वल

मक्कइह = अकेल तनहा

मम = मैंने

मलिक = यवनों की श्रेक सम्मान जनक
उपाधि सेनापति

मल्लमौलि = वीर गिरोमणि

मान = गव

मिइ = मेरे

मिळिपठ = भिडा

मीर = बहादुर यवन सरदार

मुक्कइ = छोड़ता है

मुग्गरि = सेना में

मुफ = मेरा

मुट्टिबळ = पाठी-सी सेना

मुणमत्तणि = अस्तराए

मुणसि = बहना या

मुदा = प्रसन्न

मुदास = उगम

मुक्करद = अकेले तनहा

मुरट गान = स्वाभिमान

मुरवइ = मरोडता है

मुह = मुझ

मुहडाया = परास्त कर दिये

मुहि = मुह से, मुह, मुह मे

महु = पुन

मू गळ = मुगल हाथी

मेच्छ = यवन

मेच्छायण = यवन स य

मेछ = यवन

र

रउह = यवन

रउहह = यवनी का

रण ताणी = युद्धभय

रणमाल = योद्धा

रणवाउलु = रणो मत्त

रणकुळ = रण के लिए व्यग्र

रणि = युद्ध म

रत्ता = प्रनुरक्त होकर

रवितळ = समस्त भू भाग म

रहमाणी = यवन

रहि = दास सेवक

रा = राजा

राउत = राजपुत्र एव उपाधि

राउरावण = घोर

रामायण = युद्ध

रवता = शय्यार, इतरा

रकर = तरफ

रहू = रीझ रोने वाले

रहिर = शिघर

रुब = यवन

रेणइ = धूलि से

रोमवमि = गरोव

रोहण = धाक्रमण करके घेरा डाल कर

ल

लखि = लाखों, देखकर

लखि = लिखकर

लसकरि = सेना

लहवरइ = भपटता है

लाखव = वासिद पत्रवाहक

लाडि = मथन करव

लोधि = शव

लोह = शस्त्र

लोहि = श्रोणित

व

वडी = से

वर = श्रेष्ठ

वळ = पुन

वळि = पुन

वहि = चलकर

वागि = बजाकर

वाटि = माग

वेगि = वेग से, शीघ्र

वेडि = युद्ध

वेलि-तरग = लहरा के समान

विदारण = तिनर वितर करने वाला

विनडिमु = काडू कर तू गा

विरग = कृष्ण यवन

विरद = सुपग

विवा = युद्ध

विसर = चुरा

विहइ = भगा देना है छमिन कर देता है

स

सकर = सोमनाथ मठानेव

सगरइ = मुढाप

सगरि = युद्ध में
 सचरीय = चली
 सभलि = सुनाई देती है, सुन कर
 सइ = सहायताय
 सगबा = सगब
 सद् = शब्द
 सदा = शत्रुों वाले
 सदा = हमेशा
 सनदा = तत्पर
 सग्वा = सभी
 सम = समान
 समधिय = दिया
 समरि = योगनियम युद्ध में, स्मरण करके
 समुहर = सेना का अग्रभाग
 समुहरि = सेना के अग्रभाग में
 सरक्का = शर के समान
 सरणाई = गहनाई (मुढबाद्य)
 सरिस = समान
 सरिसु = सत्रोध समान
 सवि = सब
 सविता = सूर्य
 सायर = समुद्र
 सासन = राज्य
 साहण = चतुर्विध सत्य, घोडा
 साहणवइ = सासनाधिपति
 साह = एक उभाधि, सहायता
 साहस = शीघ्रता करने वाला जल्दबाज
 साहसिजक = अत्याचारी
 साहसी = चपल
 सिम्बरवइ = चौहान (एक क्षत्रिय जाति)
 सिक्ला = शिक्षा

सिरि = सिर पर, ऊपर
 सिल्लार = यात्रा
 सिल्लारह = बीरो की
 सिहरि = गिखर, सिरा पहाड़ों क
 सिहूली = आतनाद
 सीगणी = धनुष
 सीबाणउ = बाज पक्षी
 सुपय = शासक को
 सुर = स्वर, ध्वनि
 सुरहि = गायो का
 सुहड = सुभट्ट

ह

हक्कारिअ = संबोधन करके बुला कर
 हत्पइ = हाथों स
 हय = घोडा
 हयधुर = अश्वपद
 हयमर = घोडा
 हयमर फोज = प्रश्व सत्य
 हयमरि = घोडे पर
 हराम = नष्ट
 हरि = हरण कर लिया
 हलाल = स्वीकार्य
 हसि = हमकर
 हाल माल-दीवाणी = हुकूमत
 हिव = सब, सभी
 हुसिमर = सावधान
 हेडवि = हाक कर
 हेजव = दूत
 हुना = पूकार करके
 हेराण = चकित

